



ओशो सुगंधा

अगस्त 2022



पठनीय एवं



श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका



संबंधों का रहस्य : केन्द्रों का मिलन
हंसते व जीवंत धर्म के प्रतीक कृष्ण

एक अशांत हो,
तो दूसरा शांत रहे
प्रेम को सद्यता की भांति लो



ओशो सुगंधा

वर्ष-1/अंक-8

अगस्त 2022



पठनीय एवं



श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

परमगुरु ओशो के चरणों में समर्पित

प्रेरणास्त्रोत

स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती एवं माँ अमृत प्रिया

संपादन एवं संकलन

माँ मोक्ष संगीता

अन्य सहयोग

मस्तो बाबा

कला एवं साज सज्जा

आनंद संदेश



contact@oshofragrance.org

अधिक जानकारी व संपर्क सूत्र



Osho fragrance Numbers -
9464247452, 9311806388, 9811064442,
9466661255, 9890341020, 8889709895



Youtube page - Rajneesh Fragrance



Facebook page - Rajneesh Fragrance



Instagram - Osho Fragrance



Twitter - Rajneesh Fragrance



oMeditate App -
Osho Fragrance's Mobile App***

Keep up to date with Osho Fragrance program schedules and live events. Read the latest articles, Osho books, watch the newest videos on various topics, listen to bhajans by Ma Amrit Priya Ji, and participate in guided meditation techniques.

Ask questions to our Masters Swami Shailendra Saraswati and Ma Amrit Priya. Get automatic notifications on key events and daily quotes of Osho wisdom.

Download our official Android App on google play store by searching oMeditate or by clicking on the below link-

Note: The contents are getting updated daily, please keep watching this space for more to come.



Download Osho Hindi & English Books from the link -



contact@oshofragrance.org

ओशो सुगंधा

पठनीय एवं श्रवणीय

मासिक ई-पत्रिका की

विशेषताएं

यह एक जीवंत पत्रिका है
नीचे दर्शाए गए चिह्न इस पत्रिका में आपको
विभिन्न जगह मिलेंगे, जिनके स्पर्श मात्र से
सक्रिय हो जाएंगे



ऑडियो

इस बटन को स्पर्श करते ही
आप संगीत का ऑडियो सुन
अथवा डाउनलोड कर सकते
हैं



वीडियो

इस बटन को स्पर्श करते ही
आप वह वीडियो देख सकते
हैं



व्हाट्स
ऐप

इस बटन को स्पर्श करते ही
आप व्हाट्स ऐप पर
सम्बंधित व्यक्ति को संदेश
भेज सकते हैं



गुगल
मैप

इस बटन को स्पर्श करते ही
आपके फ़ोन पर उस जगह
का गुगल मैप खुल जाएगा



पुस्तक

इस बटन को स्पर्श करते ही
आप PDF में पढ़ अथवा
डाउनलोड कर सकते हैं



वेब
साइट

इस बटन को स्पर्श करते ही
आप सीधे उस वेब साइट पर
जा सकते हैं

अनुक्रम

1. पास बुलायें आंखें ओशो की	06
2. संबंधों का रहस्य : केन्द्रों का मिलन	07
3. प्रेम को साधना की भांति लो	12
4. एक अशांत हो, तो दूसरा शांत रहे	17
5. हंसते व जीवंत धर्म के प्रतीक कृष्ण	18
6. नटराज ध्यान	23
7. ओशो प्रेम-पाति (ओशो द्वारा हस्तलिखित पत्र)	24
8. ओशो ओडियो प्रवचन (कृष्ण स्मृति-1-22)	25
9. Insight into Sannyas Names	26
10. ओशो का ओशनिक साहित्य	28
11. कृष्ण को पाने का उपाय	29
12. निगेटिव विचार से छुटकारा और प्रभु मार्ग	30
13. स्वस्थ रहें, मस्त रहें	33
14. आपके सवाल- स्वामी जी के जवाब (प्रश्नोत्तर)	34
15. Swami Shailendra's Videos	35
16. छोटी-छोटी घटनाएं : बड़ी-बड़ी प्रेरणाएं	36
17. म्यूजिक एलबम - ओशो नमन तुम्हें	40
18. आनंद की कसौटी- सार गर्भित कहानी	41
19. हास्य-विनोद	42
20. आगामी कार्यक्रम	44
21. समाचार	45
22. पूर्व के संस्करण	47



‘आनंदित व्यक्ति में व्यक्तित्व होता है; दुखी व्यक्ति में कोई व्यक्तित्व नहीं होता। दुखी व्यक्ति भीड़ का हिस्सा होता है; आनंदित व्यक्ति व्यक्ति होता है, उसमें एक निजता होती है। और आनंदित व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता को किसी भी मूल्य पर खोने को राजी नहीं हो सकता, क्योंकि वह जानता है उसका आनंद भी उसी क्षण खो जाएगा जिस क्षण स्वतंत्रता खोएगी।’
—ओशो

प्यारे सह-यात्रियों,
अगस्त 2022 की अंक की शुरुआत करते हैं ओशो के चरणों में अर्पित
एक गीत के साथ -

हमको पास बुलायें आँखें ओशो की

हमको पास बुलायें आँखें ओशो की
सोया भाग जगायें आँखें ओशो की
पग-पग दीप जलायें आँखें ओशो की
गहरे राज बतायें आँखें ओशो की

एक समुन्द्र इनमें हर दम प्यार भरा लहराता है
डूबने वाला मिटके इनमें अमृत हो जाता है
बेड़ा पार लगायें आँखें ओशो की

प्रभु को पाने कोई न भटके मस्जिद में मंदिर में
उड़ना सीखे खुद के अंदर चेतना के अंबर में
सीधी राह दिखायें आँखें ओशो की

सुबह ध्यान का सूर्य उदय हो संध्या में कीर्तन हो
जीवन का सम्मान हृदय में हर क्षण हरि सुमिरन हो
अमृत जल बरसायें आँखें ओशो की

इन आँखों की मधुशाला से कितने प्याले भरते हैं
कितने हैं दीवाने, कितने मयकश इन पर मस्ते हैं
भर-भर जाम पिलायें आँखें ओशो की



संबंधों का रहस्य : केंद्रों का मिलन

-ओशो



प्रश्न: ओशो! अपने जीवन साथियों जैसे-पत्नी या प्रेमी-प्रेमिका के बारे में कब तक हमें धैर्य के संग उसका साथ निभाते हुए, संबंध में दृढ़ता से बने रहना चाहिए और कब हमें उस संबंध को निराश अथवा विध्वंसात्मक मानकर छोड़ देना चाहिए? क्या हमारे संबंध हमारे पिछले जन्मों से भी प्रभावित होते हैं?

संबंध अनेक रहस्यों में से एक हैं और क्योंकि वे दो व्यक्तियों के मध्य होते हैं, इसलिए वह दोनों पर निर्भर करते हैं। जब भी दो व्यक्ति मिलते हैं, एक नया संसार सृजित होता है। केवल उनके मिलन के द्वारा ही एक नवीन तथ्य सृजित हो जाता है, जो पहले वहां नहीं था, जो कभी भी अस्तित्व में नहीं था। और इस नई घटना के द्वारा दोनों व्यक्ति बदलकर, रूपांतरित हो जाते हैं।

किसी से संबंधित न होने पर तुम एक भिन्न व्यक्तित्व होते हो और किसी से संबंधित हो जाने पर तुम अचानक ही कुछ और हो जाते हो, जैसे कुछ नयापन घटित होता है। एक स्त्री जब प्रेमिका बनती है तो वह वही पहले वाली स्त्री नहीं रह जाती है। एक पुरुष, जब एक पिता बनता है, तो वह पहले जैसा पुरुष नहीं रहता है। एक बच्चा जब जन्म लेता है, तब हम एक महत्वपूर्ण बिंदु को बिल्कुल भूल जाते हैं कि जिस क्षण बच्चा जन्म लेता है उसी क्षण में एक मां का भी तो जन्म होता है। वह पहले केवल एक साधारण स्त्री थी, लेकिन वह मां कभी भी नहीं थी। मां बनते ही वह स्त्री पूर्णतः बदल जाती है, वह पूरी तरह से एक नई स्त्री होती है।

संबंध तुम्हारे द्वारा सृजित होते हैं परंतु बाद में, उन्हीं संबंधों के द्वारा तुम्हारा सृजन होता है। दो व्यक्ति मिलते हैं, इसका अर्थ है कि दो संसार मिलते हैं। यह कोई सरल चीज नहीं है, बल्कि बहुत ही जटिल, यहां तक कि अत्याधिक जटिल चीज है। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं में एक अवर्णित संसार होता है, उसके पास एक लंबे अतीत और एक शाश्वत भविष्य का जटिल रहस्य होता है।

प्रारंभ में केवल परिधियां अथवा बाह्य भाग ही मिलते हैं, लेकिन यदि कोई संबंध आत्मीयता में विकसित हो, उसमें निकटता घनिष्ठ हो जाए, वह संबंध गहरा होने लगे तो धीरे-धीरे उनके केंद्र भी मिलना शुरू हो जाते हैं। जब केंद्र मिलते हैं तो उसे प्रेम कहा जाता है। जब परिधियां मिलती हैं तो वह जान-पहचान

होती है। जब तुम केवल बाहर से, औपचारिक रूप से, केवल बाहरी सीमा से किसी व्यक्ति के साथ परिचित होते हो, तब वह जान-पहचान होती है। कई बार तुम इसी जान-पहचान को प्रेम कहने लग जाते हो। तब तुम एक भ्रम में हो। बाहरी जान-पहचान, प्रेम नहीं है।

प्रेम बहुत दुर्लभ है। एक व्यक्ति से उसके केंद्र पर पहुंचकर मिलना, स्वयं को एक क्रांति से गुजारने जैसा है, क्योंकि यदि तुम एक व्यक्ति को उसके केंद्र पर मिलना चाहते हो, तो तुम्हें भी उस व्यक्ति को अपने केंद्र तक पहुंचने की अनुमति देनी होगी। तुम्हें आघात सहने योग्य बनना होगा, तुम्हें अति संवेदनशील होना होगा, तुम्हें उसके लिए पूर्ण रूप से खुले रहना होगा। यह जोखिम उठाने जैसा है। किसी व्यक्ति को अपने केंद्र तक पहुंचने की अनुमति देना बहुत खतरनाक है, यह खतरा मोल लेने जैसा है, क्योंकि तुम यह भी नहीं जानते हो कि वह व्यक्ति तुम्हारे साथ क्या करेगा? और यदि एक बार तुम्हारे सभी गुप्त रहस्य जान लिए जाएं, एक बार तुम्हारा छुपा हुआ व्यक्तित्व अनावृत हो जाए, यदि एक बार तुम पूरी तरह अनाश्रित कर दिए जाओ तो तुम नहीं जानते कि अब दूसरा व्यक्ति तुम्हारे साथ क्या व्यवहार करेगा? वहां एक भय बना रहता है और इसी कारण हम कभी भी किसी के साथ पूर्ण रूप से नहीं खुलते हैं।

केवल एक ऊपरी जान-पहचान हो गई और हम सोचते हैं कि प्रेम घटित हो गया। केवल परिधियां मिलती हैं और हम सोचते हैं कि हमारा मिलन हो गया। तुम केवल अपनी परिधि मात्र ही नहीं हो। वास्तव में परिधि तो तुम्हारा वह घेरा है, जहां तुम्हारा अंत होता है। परिधि तो केवल तुम्हारे चारों ओर की घेराबंदी है, वह बाड़ा है। वह तुम नहीं हो। परिधि वह स्थान है जहां तुम्हारा अंत होता है और संसार शुरू होता है। यहां तक कि अनेक वर्षों तक एक साथ रहने वाले पति-पत्नी के मध्य भी केवल जान-पहचान ही हो सकती है। हो सकता है कि वे केंद्र के तल पर एक-दूसरे को न जानते हों। तुम किसी व्यक्ति के साथ जितना अधिक रहते हो, तुम उतना ही यह भूल जाते हो कि तुम्हारे केंद्र एक-दूसरे से अनजाने हैं।

इसलिए समझ लेने जैसी पहली बात यह है कि जान-पहचान को प्रेम की भांति मत लो। हो सकता है कि तुम आपस में प्रेम कर रहे हो, हो सकता है तुम्हारे बीच शारीरिक संबंध भी हों, लेकिन सेक्स भी केवल परिधि पर है। जब तक केंद्रों का मिलन नहीं होता, तब तक सेक्स भी केवल दो शरीरों का ही मिलन है। और दो शरीरों का मिलन तुम्हारा वास्तविक मिलन नहीं है। सेक्स भी मात्र एक भौतिक और शारीरिक जान-पहचान ही है। तुम किसी व्यक्ति को अपने केंद्र में प्रवेश करने की केवल तभी अनुमति दे सकते हो, जब तुम्हें कोई डर न हो, जब तुम भयभीत न हो।

इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि दो तरह के संबंध होते हैं। एक भयोन्मुख और दूसरा प्रेमोन्मुख। भयोन्मुखी जीवन शैली, कभी भी तुम्हें किसी गहन संबंध में नहीं ले जा सकती है। तुम सदा भयभीत बने रहोगे और तुम्हारा भय दूसरे को केंद्र तक पहुंचने की अनुमति नहीं दे पाएगा। तुम दूसरे को अपने गहनतम और प्रामाणिक केंद्र में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दे सकोगे। तुम किसी एक विशिष्ट सीमा तक ही दूसरे को प्रवेश करने की अनुमति देते हो और उसके बाद दीवार आ जाती है... सब कुछ वहीं रुक जाता है।

प्रेम की ओर उन्मुख व्यक्ति धार्मिक व्यक्ति होता है। प्रेमोन्मुख व्यक्ति का अर्थ है कि जो भविष्य के प्रति भयभीत नहीं है, जो प्रभाव और परिणाम के बारे में न डरते हुए वहीं और अभी में जीता हो।

यही बात भगवान श्रीष्ठा गीता में अर्जुन से कहते हैं : 'परिणाम की चिंता मत करो'। मत सोचो कि कल क्या परिणाम होगा? केवल यहीं बने रहो और अभी इस क्षण में समग्रता से अपना कर्म करो। जोड़-तोड़ मत करो। भयोन्मुखी व्यक्ति हमेशा गणना, जोड़-तोड़, हिसाब-किताब कर रहा है, वह योजना बना रहा है, वह सुरक्षित होने की पूरी व्यवस्था कर रहा है। इस तरह से उसका पूरा जीवन नष्ट हो जाता है।

मैंने एक वृद्ध झेन फकीर के बारे में सुना है। वह मृत्यु शैया पर पड़ा हुआ था। उसकी अंतिम श्वासें चल रही थीं। उसने घोषणा कर दी थी कि शाम तक वह नहीं रहेगा। इसलिए उसके शिष्यों, मित्रों, प्रेमियों और कई चाहने वालों का आना-जाना शुरू हो गया। दूर-दूर से अनेक लोग एकत्रित हो गए।

उसके पुराने शिष्यों में से एक ने जब यह सुना कि सदगुरु की मृत्यु होने जा रही है, तो वह बाजार की ओर दौड़ा। किसी ने उससे पूछा : 'सदगुरु तो अपनी झोपड़ी में हैं, फिर तुम बाजार क्यों जा रहे हो?'

उस शिष्य ने उत्तर दिया- 'मेरे सदगुरु एक विशेष तरह के केक को बहुत पसंद करते हैं, इसलिए मैं वही केक खरीदने जा रहा हूँ।'

उस केक को खोज पाना बहुत कठिन था, क्योंकि अब वह चलन से बाहर हो गया था, कहीं भी आसानी से मिलता नहीं था। लेकिन किसी प्रकार उसने शाम तक उस केक की व्यवस्था कर ली। वह केक लेकर दौड़ता हुआ आया। प्रत्येक व्यक्ति चिंतित था, ऐसा लग रहा था जैसे मानो सदगुरु किसी व्यक्ति के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे अपनी आंखें खोलकर देखते थे और फिर आंखें बंद कर लेते थे। जब उनका यह शिष्य आया तो उन्होंने कहा : 'तो तू आ ही गया। केक कहाँ है?'

शिष्य ने केक प्रस्तुत कर दिया और वह बहुत प्रसन्न था कि सदगुरु ने केक के लिए पूछा। मरते हुए सदगुरु ने केक अपने हाथों में लिया, लेकिन उनके हाथ बिल्कुल भी नहीं कांप रहे थे। वे बहुत वृद्ध थे, लेकिन फिर भी उनका हाथ नहीं कांप रहा था। इसलिए किसी व्यक्ति ने उनसे पूछा : 'आप इतने अधिक वृद्ध हैं और मृत्यु की कगार पर खड़े हैं। आपकी आखिरी सांस बस छूटने ही वाली है, लेकिन आपका हाथ नहीं कांप रहा है?'

सदगुरु ने कहा : 'क्योंकि मैं कभी भी नहीं कांपा, चूंकि मुझे कभी कोई भय नहीं रहा। मेरा शरीर बूढ़ा हो गया है, लेकिन मैं अभी भी युवा हूँ और मैं तब तक युवा बना रहूँगा, जब तक यह शरीर न मर जाए।'

तब गुरु ने केक का एक टुकड़ा खाना शुरू कर दिया। किसी व्यक्ति ने उनसे पूछा : 'प्यारे सदगुरु! आपका अंतिम संदेश क्या है? आप शीघ्र ही हमसे विदा ले लेंगे। आप हमसे क्या चाहते हैं जिसका हम स्मरण रखें।'

सदगुरु मुस्कराए और कहा : 'ओह! यह केक कितना अधिक स्वादिष्ट है?'

यह एक ऐसा व्यक्ति है, जो यहीं और अभी में जीता है : 'यह केक बहुत स्वादिष्ट है।' मृत्यु भी उसके लिए असंगत है। अगला क्षण अर्थहीन है। इस क्षण में तो बस... यह केक बहुत अधिक स्वादिष्ट है।

यदि तुम इस क्षण में, वर्तमान क्षण में, उस क्षण की उपस्थिति में प्रचुर समृद्धि के साथ बने रह सकते हो, केवल तभी तुम प्रेम कर सकते हो। प्रेम एक दुर्लभ खिलावट है और यह केवल कभी-कभी ही घटती है। लाखों-करोड़ों लोग इस झूठी दृष्टि के साथ जीते हैं कि वे प्रेमी हैं। वे विश्वास करते हैं कि वे प्रेम करते हैं, लेकिन यह केवल उनका विश्वास है।

प्रेम का होना एक दुर्लभ खिलावट है। यह कभी-कभी ही घटती है। यह दुर्लभ इसलिए है, क्योंकि यह केवल तभी घटित हो सकती है जब कोई भय न हो और पहले भी कभी न रहा हो। इसका अर्थ है कि प्रेम केवल उन्हीं लोगों को घटित हो सकता है, जो बहुत गहराई तक आध्यात्मिक और धार्मिक हों। सेक्स सभी के लिए संभव है, सभी के लिए जान-पहचान भी संभव है, पर प्रेम नहीं।

जब तुम भयभीत नहीं हो, तब वहाँ छिपाने को कुछ भी नहीं होता है, तब तुम एक खुली किताब की तरह हो सकते हो, तब तुम सभी दीवारों और सीमाओं को हटा सकते हो और ऐसे में तुम दूसरे को अपने भीतर के प्रामाणिक केंद्र तक प्रविष्ट होने के लिए आमंत्रित कर सकते हो। स्मरण रहे : यदि तुम किसी व्यक्ति को अपने गहराई में प्रवेश करने की अनुमति देते हो तो दूसरा व्यक्ति भी तुम्हें स्वयं के अंदर प्रवेश करने की अनुमति देगा, क्योंकि जब तुम किसी व्यक्ति को अपने अंदर प्रवेश करने की अनुमति दे देते हो तो एक आस्था और एक विश्वास निर्मित होता है। जब तुम भयभीत नहीं हो तो दूसरा भी निर्भय हो जाता है।

साधारणतः तुम्हारे प्रेम में, हमेशा भय बना रहता है। पति पत्नी से भयभीत है और पत्नी पति से भयभीत है। प्रेमी हमेशा भयभीत रहते हैं। तब यह प्रेम नहीं है, यह केवल दो भयभीत व्यक्तियों के मध्य एक व्यवस्था है, जिसमें दोनों ही एक-दूसरे पर आश्रित हैं, इस सुविधाजनक व्यवस्था में वे लड़ रहे हैं, एक-दूसरे का शोषण कर रहे हैं, एक-दूसरे को नियंत्रित कर रहे हैं, जोड़-तोड़ कर रहे हैं, प्रभुत्व और अधिकार स्थापित कर रहे हैं, लेकिन यह प्रेम नहीं है।

यदि तुम प्रेम को घटित होने की अनुमति दे सकते हो तो प्रार्थना और ध्यान की भी कोई आवश्यकता नहीं है और न ही मंदिर अथवा चर्च जाने की कोई आवश्यकता है। यदि तुम सही मायने में प्रेम कर सको तो तुम परमात्मा को भी पूर्णतः भुला सकते हो, क्योंकि प्रेम के द्वारा तुम्हें वह सब कुछ स्वतः ही घटित होगा—ध्यान, प्रार्थना और परमात्मा सहज ही घटित होंगे। यह सब कुछ तुम्हें मिलेगा ही। जीसस जब कहते हैं कि प्रेम ही परमात्मा है... तो इस कथन से उनका यही आशय है कि प्रेम के द्वारा ही परमात्मा मिलेगा।

लेकिन ऐसा दिव्य प्रेम कर पाना कठिन है। समस्त भय को छोड़ना होगा। यह बड़ी अजीब सी बात है कि तुम अत्याधिक भयभीत हो और तुम्हारे पास खो देने लायक भी कुछ नहीं है।

कबीर ने कहा है : 'मैं लोगों के अंदर देखता हूँ कि वे इतने अधिक भयभीत हैं, लेकिन मैं समझ नहीं पाता हूँ कि आखिर क्यों, क्योंकि उनके पास खोने के लिए तो कुछ भी नहीं है।' कबीर कहते हैं कि लोग उस नग्न व्यक्ति के समान हैं, जो कभी भी नदी में नहाने के लिए नहीं जाता है, क्योंकि वह डरता है कि वह अपने कपड़े कहाँ सुखाएगा? यही तुम्हारी स्थिति है, तुम नग्न हो, कपड़े हैं ही नहीं, लेकिन फिर भी हमेशा कपड़ों के लिए भयभीत बने रहते हो।

तुम्हारे पास खोने के लिए है क्या? कुछ भी तो नहीं। यह शरीर एक दिन मृत्यु का ग्रास बन जाएगा। इससे पहले कि मृत्यु इस शरीर को ले जाए, इसे प्रेम को समर्पित कर दो। जो कुछ भी तुम्हारे पास है, वह तुमसे ले ही लिया जाएगा। इससे पहले कि वह तुमसे छिन जाए, तुम उसे बांटते क्यों नहीं? तुम्हारा भय केवल परिग्रह करने का एक ढंग है। यदि तुम उसे दे सकते हो, बांट सकते हो तो तुम स्वामी हो जाते हो, मालिक बन जाते हो। एक दिन सब कुछ तुमसे ले लिया जाएगा। ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे तुम सदैव अपने पास रख सको। मृत्यु प्रत्येक चीज़ को नष्ट कर देगी।

इसलिए यदि तुम मुझे ठीक से समझ पा रहे हो तो मृत्यु और प्रेम के बीच में एक संघर्ष है। यदि तुम दे सकते हो तो तब कोई मृत्यु नहीं होगी। इससे पहले कि कोई भी चीज़ तुमसे छीनी जा सके तुम उसे दे देना होगा। तुम्हें उसे एक उपहार बना देना होगा। तब कोई मृत्यु नहीं हो सकती है। एक प्रेमी के लिए कोई मृत्यु नहीं है। प्रेम न करने वाले के लिए प्रत्येक क्षण ही एक मृत्यु है क्योंकि प्रत्येक क्षण जैसे उससे कुछ छीना जा रहा है। शरीर मित रहा है, वह प्रत्येक क्षण उसे खो रहा है और तब एक दिन मृत्यु होगी तथा प्रत्येक चीज़ नष्ट हो जाएगी।

भय क्या है? तुम इतने अधिक भयभीत क्यों हो? यदि तुम्हारे संदर्भ में प्रत्येक चीज़ ज्ञात है और तुम एक खुली हुई किताब के समान हो, तो फिर भयभीत क्यों हो? कोई कैसे तुम्हारी हानि कर सकता है? यह सब केवल झूठी धारणाएं हैं, मिथ्या सोच है और समाज के द्वारा दी गई एक कंडीशनिंग हैं, कि तुम्हें स्वयं को छिपाना है, तुम्हें स्वयं अपनी सुरक्षा करनी है और इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति तुम्हारा शत्रु है, प्रत्येक व्यक्ति तुम्हारा विरोधी है, तुम्हें मानसिक रूप से निरंतर इन शत्रुओं से जूझते रहना है। वास्तव में, कोई भी तुम्हारा विरोधी नहीं है। यहां तक कि जब तुम सोचते हो कि कोई तुम्हारे विरोध में है तो तब भी वह विरोधी नहीं है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं के प्रति ही चिंतित है, उसे तुमसे कोई लेना-देना नहीं है। इसलिए भयभीत होने लायक कुछ भी नहीं है। संबंध निर्मित करने से पहले यह बात अनुभव कर लेनी होगी। तब फिर कोई भय नहीं रहता है।

इस बात पर ध्यान करो और तब किसी अन्य को अपने अंदर प्रवेश की अनुमति दो, तब ही किसी अन्य को भीतर आमंत्रित करो। कहीं भी कोई अवरोध पैदा मत करो, सदैव एक सुगम और सहज मार्ग की भांति दूसरे को अपने पर से गुजरने दो, कहीं कोई ताला न हो, यहां तक कि कोई दरवाजा न हो, सदैव



स्वागत भाव से बाहे फ़ैलाए रहो, तुम तक आने को कोई भी द्वार बंद न हो... केवल तभी प्रेम संभव है।

जब दो केंद्रों का मिलन होता है, तभी प्रेम घटित होता है। प्रेम एक रसायनिक प्रक्रिया के जैसा है, जैसे हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के मिलने पर, रसायनिक क्रिया द्वारा, पानी जैसी एक नई चीज़ निर्मित होती है, वैसा ही प्रेम है। तुम्हारे पास ऑक्सीजन हो सकती है, तुम्हारे पास हाइड्रोजन हो सकती है, लेकिन यदि तुम प्यासे हो तो यह दोनों ही रसायन व्यर्थ हैं। तुम्हारे पास पर्याप्त मात्रा में या जितनी तुम चाहते हो उतनी ही हाइड्रोजन और ऑक्सीजन हो सकती है, परंतु उससे प्यास नहीं बुझेगी।

जब दो केंद्र मिलते हैं तो एक नवीनता का जन्म होता है। वह नवीनता प्रेम है, यह ठीक पानी के समान होता है, उससे अनेक जन्मों की प्यास तृप्त हो जाती है। अचानक तुम संतुष्ट हो जाते हो। यह प्रेम का एक प्रत्यक्ष संकेत है कि तुम संतोष से भर जाते हो, जैसे तुम्हें सबकुछ मिल गया हो और अब प्राप्त करने लायक कुछ भी न बचा हो। जैसे तुम अपने लक्ष्य तक पहुंच गए हो, मंज़िल मिल गई है और अब कोई अन्य लक्ष्य बाकी नहीं है। बीज अंकुरित हो गया है तथा विकसित होकर पुष्प भी बन गया है... जैसे बीज अपनी संपूर्ण और संभव खिलावट तक पहुंच गया है।

गहन संतोष ही प्रेम का दृश्यमान चिन्ह है। जब एक व्यक्ति प्रेम में होता है तो वह गहन संतोष में होता है। प्रेम को देखा नहीं जा सकता है लेकिन उससे उत्पन्न गहन संतोष को अनुभव किया जा सकता है। उस व्यक्ति के चारों ओर, उसकी प्रत्येक श्वास में, उसकी प्रत्येक गतिविधि में और उसके पूरे अस्तित्व में वह संतुष्टि दिखाई देती है।

तुम्हें अत्यंत आश्चर्य होगा, जब मैं कहता हूँ कि प्रेम तुम्हें कामना मुक्त बनाता है। कामना के साथ असंतोष होता है। तुम कामना करते हो क्योंकि तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है, तुम कामना करते हो और सोचते हो कि यदि तुमने कुछ पा लिया तो तुम्हें संतोष मिलेगा। असंतोष से ही कामना उत्पन्न होती है। जब प्रेम होता है और दो केंद्र मिलते हैं तो घुलकर एक-दूसरे में विलय हो जाते हैं और एक नए रासायनिक गुण का जन्म होता है, तभी वहां संतोष होता है। ऐसा लगता है जैसे मानो पूरा अस्तित्व रुक गया है और कोई भी गतिविधि नहीं हो रही है। तब वर्तमान का वह क्षण मात्र ही वहां होता है। तब तुम कह सकते हो- 'ओह! यह केक बहुत स्वादिष्ट है।' जो प्रेम में है, उस व्यक्ति के लिए मृत्यु भी कोई अर्थ नहीं रखती है।

इसीलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि प्रेम तुम्हें कामना विहीन बनाएगा। निर्भीक बनो, सभी डरों को छोड़ दो और मुक्त हो जाओ। किसी अन्य केंद्र को अनुमति दो कि वह तुम्हारे अंदर के केंद्र से मिल सके और उसके द्वारा तुम्हारा पुनर्जन्म होगा तथा तुम्हारी आत्मा में नए गुण और लक्षण उत्पन्न होंगे। तब यह नए गुण कहते हैं कि यही परमात्मा है। परमात्मा तर्क-वितर्क नहीं है, परमात्मा तो एक पूर्णता है, वह पूर्णता का एक अनुभव है। तुमने अवश्य ही यह निरीक्षण किया होगा कि जब कभी भी तुम असंतुष्ट होते हो तो तुम परमात्मा से इंकार करना चाहते हो। जब कभी तुम असंतुष्ट होते हो तो तुम्हारा पूरा अस्तित्व यह कहना चाहता है कि कोई परमात्मा नहीं है।

यह नास्तिकता, तर्क-वितर्क के कारण नहीं है, यह असंतोष के कारण है। यह और बात है कि तुम अपनी बात को प्रमाण सहित सिद्ध कर सकते हो। तुम यह नहीं कह सकते हो कि तुम अपनी असंतुष्टता के कारण नास्तिक हो। तुम शायद यहीं कहोगे कि कोई भी परमात्मा नहीं है और मेरे पास उसके प्रमाण हैं। लेकिन यह सत्य नहीं है। यदि तुम पूर्णतः संतुष्ट हो तो अचानक तुम्हारा पूरा अस्तित्व कहता है : 'हां! परमात्मा है।' अचानक तुम उसे अनुभव करने लगते हो। पूरा अस्तित्व दिव्य बन जाता है। यदि वास्तव में प्रेम है तो पहली बार तुम यह अनुभव करोगे कि यह अस्तित्व दिव्य और आलौकिक है और सृष्टि की प्रत्येक चीज़ एक वरदान है। ऐसा अनुभव करने के लिए तुम्हें बहुत कुछ करना होगा। ऐसा घटित हो सके, उससे पहले तुम्हें बहुत कुछ नष्ट करना होगा। तुम्हें वह सभी कुछ नष्ट करना होगा जो तुम्हारे अंदर अवरोध उत्पन्न करता है।

—सफेद बादलों का मार्ग, प्रवचन-7 (अगले लेख में जारी)

लिंक अगले लेख में

प्रेम को साधना की भांति लो

-ओशो



प्रेम को एक साधना बना लो, प्रेम को एक आंतरिक अनुशासन बना लो। प्रेम को बेहूदा, हल्का और असार बनने की अनुमति मत दो। प्रेम को केवल मन के बहलावे की वस्तु मत बनने दो। प्रेम को केवल शारीरिक संतुष्टि का साधन बनने की अनुमति मत दो। प्रेम को एक आंतरिक खोज बनाओ और दूसरे व्यक्ति को एक सहायक अथवा एक मित्र की भांति लो।

यदि तुमने तंत्र के बारे में सुना है तो तुम्हें मालूम होगा, तंत्र कहता है कि यदि तुम एक सहगामी, एक मित्र, एक स्त्री अथवा एक ऐसा पुरुष खोज सको, जो तुम्हारे साथ तुम्हारे आंतरिक केंद्र तक जाने को तैयार हो, जो तुम्हारे साथ संबंध के सर्वोच्च शिखर तक गतिशील होने के लिए तैयार हो, तब यह संबंध ध्यानपूर्ण बन जाएगा। तब इस संबंध के द्वारा तुम परम-संबंध को प्राप्त कर लोगे। तब यह दूसरा व्यक्ति केवल एक द्वार बन जाता है।

मुझे यह बात और स्पष्ट करने दो। यदि तुम एक व्यक्ति से प्रेम करते हो तो धीरे-धीरे उस व्यक्ति की परिधि विलुप्त होती है अर्थात् उस व्यक्ति की रूप और आति मिटती है। तब तुम उस आकारहीन के, उस अरूप के, घनिष्ठतम संपर्क में आते हो। रूप और आकार धीरे-धीरे घुंघले होते हुए, विलुप्त हो जाते हैं। यदि तुम और अधिक गहराई में जाते हो तो यह अरूप व्यक्तित्व भी पिघलने लगता है, मिटने लगता है, और तब उस पार का झरोखा खुलता है। तब वह विशिष्ट व्यक्ति जो केवल एक द्वार था, एक सुअवसर बन जाता है और अपने प्रेमी के द्वारा तुम उस आलौकिक को खोज लेते हो।

क्योंकि हम प्रेम नहीं कर सकते, इसलिए हमें अनेक धार्मिक कर्म-कांडों और आडम्बरों की आवश्यकता होती है। वे केवल प्रतिस्थापन हैं, विकल्प हैं और वे बहुत ही क्षुद्र विकल्प हैं। मीरा को मंदिर में जाने की कोई भी आवश्यकता नहीं है, पूरा अस्तित्व ही उसका मंदिर है। वह एक वृक्ष के सामने भी नृत्य कर सकती है और वृक्ष ही उसके लिए षण बन जाता है। वह एक पक्षी के सामने भी गीत गा सकती है और वह पक्षी ही उसके लिए षण बन जाता है। वह प्रत्येक स्थान पर, अपने चारों ओर अपने षण को सृजित कर लेती है। उसका प्रेम ऐसा प्रगाढ़ है कि वह जहां कहीं भी देखती है वहां से ही द्वार खुल जाता है और षण प्रकट हो जाते हैं। परम प्रेमी षण प्रकट हो जाता है।

लेकिन इस प्रेम की पहली झलक हमेशा एक व्यक्ति के द्वारा ही आएगी। पूरे ब्रह्माण्ड के साथ, सार्वजनिक रूप से संपर्क साधना बहुत कठिन है। ब्रह्माण्ड इतना अधिक बड़ा है, इतना अधिक विराट है, उसका न आरंभ है और न ही कोई अंत है, वह अगम है। उसके साथ संबंध कहां से प्रारंभ किया जाए? कहां से उसके भीतर गतिशील हुआ जाए! तब एक व्यक्ति ही द्वार है। उस एक के साथ प्रेम में डूबो।

इस प्रेम को संघर्ष मत बनाओ। इसे दूसरे के लिए एक आमंत्रण की भांति बनने दो, उसे एक गहन स्वीति का आधार बनने दो। दूसरे को अपने अंदर प्रवेश करने की बेशर्त अनुमति दो और अचानक दूसरा विलुप्त हो जाता है तथा वहां परमात्मा ही बचता है। यदि तुम्हारा प्रेमी अथवा प्रेमिका आलौकिक नहीं बन सकते तो इस संसार में कुछ भी दिव्य अथवा अलौकिक नहीं बन सकता है। तब तुम्हारी सारी धार्मिक बातचीत निरर्थक है, ढोंग है, पाखण्ड है। यह एक बच्चे के साथ भी घट सकता है। यह एक पशु के साथ भी घट सकता है। यदि अपने पालतू कुत्ते के साथ तुम एक गहरा संबंध बना सकते हो तो यह उसके माध्यम से भी हो सकता है, वह कुत्ता भी आलौकिक बन सकता है। अतः यह स्त्री अथवा पुरुष का प्रश्न नहीं है। कोई भी उस दिव्यता के मूल स्रोत तक पहुंचने का मार्ग बन सकता है। यह माध्यम तुम्हें सहजता से, प्रातिक्रमिक ढंग से स्रोत तक पहुंचा देता है। यह कहीं से भी, किसी के द्वारा भी घटित हो सकता है। आधारभूत कुंजी यही है कि तुम्हें दूसरे को अपने भीतर के गहनतम केंद्र तक, तुम्हारे अस्तित्व के मूल आधार तक प्रवेश करने की अनुमति देनी चाहिए।

लेकिन हम स्वयं को धोखा दिए चले जाते हैं। हम सोचते हैं कि हम प्रेम करते हैं और यदि तुम सोचते हो कि तुम भी प्रेम कर पाते हो, तब तो वहां तनिक भी संभावना नहीं है। क्योंकि यदि यह प्रेम है तो प्रत्येक चीज़ समाप्त ही हो जाती है। पुनः नए प्रयास करो। दूसरे व्यक्ति के भीतर छुपी हुई प्रामाणिक आत्मा को खोजने का प्रयास करो। किसी भी व्यक्ति को हल्के में मत लो। प्रत्येक व्यक्ति एक रहस्य है, यदि तुम उसके अंदर गहरे उतरते जाओगे तो पाओगे कि वह अंतहीन है।

लेकिन हम दूसरे व्यक्ति के साथ जल्दी ही ऊब जाते हैं, क्योंकि हम केवल परिधि पर देखते हैं और हमेशा परिधि पर ही घूमते रहते हैं।

मैं एक कहानी पढ़ रहा था—

एक व्यक्ति बहुत बीमार था और उसने सभी तरह के उपचारों और पद्धतियों का प्रयोग कर लिया था। परंतु उन सब से उसे कोई सहायता नहीं मिली। तब वह एक सम्मोहनकर्ता के पास गया और उस सम्मोहनकर्ता ने उसे एक मंत्र दिया तथा उस मंत्र को निरंतर दोहराने का सुझाव भी दिया कि मैं रुग्ण नहीं हूँ। उसने कहा कि प्रत्येक सुबह पंद्रह मिनट और प्रत्येक शाम पंद्रह मिनट तक यही दोहराना है कि मैं बीमार नहीं हूँ, मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ। दिन में भी जब कभी याद आ जाए तो यह दोहराते रहो। कुछ ही दिनों में वह व्यक्ति सच में ठीक होना शुरू हो गया और कुछ सप्ताह में तो वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गया। तब उसने अपनी पत्नी से कहा : 'यह तो चमत्कार हो गया। क्या मुझे उस सम्मोहनकर्ता के पास किसी दूसरे चमत्कार



के लिए जाना चाहिए? क्योंकि पिछले कुछ समय से मैं अपने भीतर कामवासना की उत्तेजना का अनुभव नहीं कर रहा हूँ और हमारे संबंध लगभग समाप्त हो गए हैं। कोई इच्छा ही नहीं बची है।'

पत्नी बहुत खुश हुई और उसने कहा : 'आप अवश्य जाइए', क्योंकि वह भी बहुत निराशा का अनुभव कर रही थी।

वह व्यक्ति सम्मोहनकर्ता के पास गया। जब वह वहां से वापस लौटा तो उसकी पत्नी ने उससे पूछा : 'अब उन्होंने कौन सा मंत्र दिया है?' उस व्यक्ति ने कुछ नहीं बताया, लेकिन कुछ ही सप्ताह के अंदर उसकी कामवासना पुनः लौट आई। पत्नी बहुत अधिक उलझन में थी, परेशान थी। वह उस मंत्र को जानने का निरंतर आग्रह करती थी, लेकिन वह व्यक्ति हंसकर टाल देता था। एक दिन सुबह जब वह बाथरूम में पंद्रह मिनट मंत्र का जाप कर रहा था तो पत्नी ने उसे सुनने का प्रयास किया कि वह क्या कह रहा है?

वह कह रहा था— 'वह मेरी पत्नी नहीं है, वह मेरी पत्नी नहीं है, वह मेरी पत्नी नहीं है।'

हम अपने संबंधों को बहुत हल्के में ले लेते हैं। कोई स्त्री तुम्हारी पत्नी है और बस संबंध समाप्त हो जाता है। कोई व्यक्ति तुम्हारा पति है और बस प्रेम समाप्त हो जाता है। अब वहां कोई रोमांच नहीं है, कोई नयापन नहीं है। अब दूसरा व्यक्ति एक वस्तु बन गया है, वह उपयोग की सामग्री बन जाता है। अब उस दूसरे व्यक्ति में कोई भी रहस्य नहीं है, जिसे खोजा जाए, क्योंकि वह अब तुम्हारे लिए नया नहीं है।

स्मरण रहे, बढ़ती आयु के साथ प्रत्येक चीज़ मृत बन जाती है। परिधि हमेशा पुरानी ही होती है परंतु भीतर का केंद्र हमेशा नूतन रहता है। बाहर की परिधि नूतन नहीं बनी रह सकती, क्योंकि प्रत्येक क्षण वह पुरानी हो रही है, बासी हो रही है, मुरझा रही है। केंद्र हमेशा नूतन और युवा बना रहता है। तुम्हारी आत्मा न तो एक बच्चा है, न ही एक युवा है और न ही वह वृद्ध है। तुम्हारी आत्मा तो पूरी तरह से निर्लेप है, वह शाश्वत है, वह नित-नूतन है। आत्मा की कोई आयु नहीं है। तुम एक प्रयोग कर सकते हो। तुम एक युवा हो और हो सकता है कि तुम वृद्ध हो, केवल अपनी आंखें बंद करो और अपने भीतर खोजने का प्रयास करो कि तुम्हारा अंतरतम, तुम्हारी आत्मा, तुम्हारा केंद्र कैसा है? वह वृद्ध है अथवा युवा? तुम अनुभव करोगे कि तुम्हारा केंद्र इनमें से कुछ भी नहीं है। वह तो हमेशा ही नूतन और ताजा है। वह कभी भी पुराना नहीं होता। क्यों? क्योंकि केंद्र समय में बंधा हुआ नहीं है, वह समय से पार है, समयातीत है।

समय की प्रक्रिया में, समय के बंधन में प्रत्येक चीज़ पुरानी हो जाती है। एक मनुष्य जन्म लेता है और उसी क्षण से पुराना होना शुरू हो जाता है। जब हम कहते हैं कि बच्चा एक सप्ताह का हो गया है तो इसका अर्थ है कि बुढ़ापे का एक सप्ताह बच्चे के अंदर प्रविष्ट कर गया है। बच्चे ने मृत्यु की ओर, अपने पहले सात दिन की यात्रा कर ली है, उसने मृत्यु की प्रक्रिया के सात दिन पूरे कर लिए हैं। वह धीरे-धीरे मृत्यु की ओर गतिशील हो रहा है और एक न एक दिन मर ही जाएगा।

समय की प्रक्रिया में जो कुछ भी आता है, वह पुराना हो जाता है। जैसे ही कोई समय में प्रवेश करता है, वह उसी क्षण से पुराना होना शुरू हो जाता है। तुम्हारा शरीर पुराना है और तुम्हारी बाह्य परिधि भी पुरानी है। तुम इसके साथ शाश्वत रूप से प्रेम में नहीं रह सकते, लेकिन तुम्हारा केंद्र तो हमेशा नूतन है, वह शाश्वत है, चिर-युवा है। एक बार तुम इस केंद्र के साथ संपर्क में आते हो तो प्रत्येक क्षण में प्रेम एक गहरी खोज बन जाता है और तब मधु-यामिनी का, प्रेमालाप का कभी भी अंत नहीं होता है। यदि उसका अंत हो जाता है तो वह किसी भी प्रकार से प्रेम था ही नहीं, वह केवल एक बाहरी जान-पहचान थी।

और अंतिम बात, जो हमेशा याद रखने की है कि प्रेम के संबंध में, यदि कोई चीज़ गलत हो जाती है तो तुम सदैव दूसरे को दोष देते हो। यदि सब कुछ वैसा नहीं चल रहा है जैसा कि चलना चाहिए तो दूसरा ही उसके लिए जिम्मेदार है। यह बात भविष्य के विकास की पूरी संभावना को नष्ट कर देगी। स्मरण रहे— हमेशा तुम ही जिम्मेदार होते हो, तुम स्वयं को बदलो। उन लक्षणों को छोड़ दो, जो समस्या उत्पन्न करते हैं। प्रेम को एक आत्म रूपांतरण बनाओ। जैसा कि कुशल विक्रेता के प्रशिक्षण में सिखाया जाता है कि ग्राहक हमेशा ठीक होता है। वैसे ही मैं तुमसे कहना चाहूंगा कि प्रेम और संबंधों के संसार में भी दूसरा सदा ठीक होता है, तुम ही हमेशा गलत होते हो। और प्रेमी बिल्कुल ऐसा ही अनुभव करते हैं। यदि प्रेम है और चीज़ें ठीक नहीं चल पा रही हैं, जैसा कि उन्हें चलना चाहिए तो वास्तविक प्रेमी हमेशा यही अनुभव करते हैं कि मुझ से कुछ गलत हो रहा है। दोनों ही समान रूप से यह अनुभव करते हैं। तब चीज़ें विकसित होती हैं, तब सीमाएं विलीन होती हैं और केंद्र खुलते हैं।

परंतु यदि तुम सोचते हो कि दूसरा गलत है, तो तुम स्वयं और दूसरे को, दोनों को ही बंद कर रहे हो। दूसरा भी यही सोचता है कि तुम गलत हो। विचार छूट की बीमारी की तरह होते हैं। यदि तुम सोचते हो कि दूसरा गलत है, भले ही तुमने ऐसा कहा नहीं है और यदि तुम मुस्कराते हुए यह प्रदर्शित भी कर रहे हो कि तुम ऐसा नहीं सोचते हो तो भी दूसरा तुम्हारे चेहरे के द्वारा, तुम्हारी मुद्राओं के द्वारा, तुम्हारे हाव-भाव के द्वारा और तुम्हारी आंखों के द्वारा संकेत पा लेता है। यदि तुम एक महान अभिनेता हो और तुमने अथक अभ्यास

द्वारा स्वयं को साथ लिया है तो भी तुम्हारा अचेतन निरंतर संकेत भेज रहा है कि दूसरा गलत है। जब तुम यह कहते हो कि दूसरा गलत है तो दूसरा भी यह महसूस करने लगता है कि तुम गलत हो।

इस सही-गलत की चट्टान से टकराकर संबंध नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं और तब दोनों लोग अपने द्वार बंद कर लेते हैं। यदि तुम कहते हो कि कोई व्यक्ति गलत है, तो वह अपनी सुरक्षा और बचाव करना शुरू कर देता है। इसी प्रहार और बचाव के संघर्ष में सब समाप्त हो जाता है।

सदा स्मरण रहे, प्रेम में हमेशा तुम ही गलत होते हो और तब यह संभावना बनती है कि दूसरा भी ठीक इसी ढंग से सोचेगा और अनुभव करेगा। दूसरे के अंदर हम ही विचारों और भावों का सृजन करते हैं। जब प्रेमी एक-दूसरे के निकट होते हैं, तो उनके विचार निरंतर बदलते रहते हैं। यदि वे कोई बात नहीं कर रहे हैं और बिल्कुल स्वामोश हैं, तो भी वे मौन संवाद करते रहते हैं। जो लोग प्रेम में नहीं हैं, जो प्रेमी नहीं हैं, उनके लिए भाषा का उपयोग होता है। प्रेमियों के लिए तो मौन ही पर्याप्त भाषा है। बिना कुछ कहे-सुने भी वे परस्पर संवाद कर लेते हैं।

यदि तुम प्रेम को एक साधना की भांति लेते हो तब कभी यह मत कहो कि दूसरा गलत है। केवल यह खोजने का प्रयास करो कि तुम्हारे भीतर कहीं पर क्या गलत चल रहा है? उस गलत को छोड़ दो। यह बहुत कठिन लगेगा और यह एक मुसीबत बन जाएगी, क्योंकि कुछ तुम्हारे अहंकार के विरुद्ध खड़ा हो रहा है। बहुत कठिनाई मालूम होगी क्योंकि तुम्हारे गौरव को ठेस पहुंचेगी। बहुत खतरा मालूम पड़ेगा क्योंकि तुम प्रभुत्व नहीं जमा पाओगे और अधिकार नहीं रख सकोगे। दूसरों पर अधिकार जमा कर तुम अधिक शक्तिशाली कभी नहीं बन पाओगे। इन सभी कारणों से, वह गलत बात छोड़ना, तुम्हारे लिए कठिन होने जा रहा है क्योंकि उसे छोड़ना यानि तुम्हारे अहंकार का आमूल रूप से नष्ट हो जाना— इसीलिए वह बहुत दुष्कर मालूम होगी।

लेकिन अहंकार का नष्ट होना ही मुख्य बात है, मुख्य प्रयोजन है। तुम जहां कहीं से भी अपने अंतर जगत में प्रवेश करना शुरू करो, चाहे प्रेम से, चाहे ध्यान से, चाहे योग से अथवा प्रार्थना से, तुम कोई भी मार्ग चुनो पर लक्ष्य समान है और वह है : अहंकार को नष्ट करना और अहंकार को दूर फेंक देना।

प्रेम के द्वारा यह बहुत सरलता से किया जा सकता है और यह स्वाभाविक हो जाता है। प्रेम एक नैसर्गिक धर्म है, प्रेम प्रातिक है, अन्य कोई भी चीज इतनी नैसर्गिक नहीं हो सकती, वह अप्रातिक हो जाएगी। यदि तुम प्रेम के द्वारा अपने भीतर कार्य नहीं कर सकते हो तो अन्य किसी भी साधन से तुम्हारे लिए, अपने भीतर उतरना बहुत कठिन होगा।

अपने पिछले जन्मों के बारे में और भविष्य के बारे में बहुत अधिक मत सोचो। वर्तमान ही पर्याप्त है। यह मत सोचो कि संबंध अतीत से आ रहा है। निश्चित ही वह अतीत से आ रहा है, लेकिन उसके बारे में ज्यादा सोचो मत क्योंकि तब तुम और अधिक उलझन में पड़ जाओगे। चीजों को सरल और सहज बनाओ।

तुम्हारे पिछले जन्मों की ही श्रंखला आज चल रही है, इसलिए मैं इस तथ्य से इंकार नहीं करता लेकिन उसे एक बोझ मत बनाओ और यही श्रंखला भविष्य में भी जारी रहेगी, लेकिन इसके बारे में ज्यादा सोचो मत। वर्तमान का यह एक क्षण पर्याप्त से भी कहीं ज्यादा है। केवल 'केक' को चबाओ और कहो— 'यह केक बहुत स्वादिष्ट है।'

अतीत के बारे में मत सोचो और न ही भविष्य के बारे में सोचो। वे अपनी परवाह स्वयं करेंगे। सबकुछ जुड़ा हुआ है, कुछ भी अलग नहीं है। तुम अतीत में किन्हीं संबंधों के साथ रहे हो। तुमने प्रेम किया है, तुमने घृणा की है, तुमने मित्र बनाए हैं, तुमने शत्रु बनाए हैं और जाने-अनजाने में यह क्रम निरंतर चलता आ रहा है। ऐसा हमेशा से ही हो रहा है। लेकिन यदि तुम उसके बारे में चिंतन करना शुरू कर दोगे तो तुम वर्तमान क्षण से चूक जाओगे।

इसलिए इस भांति सोचो, जैसे कोई भी अतीत नहीं है और कोई भी भविष्य नहीं है। यह क्षण ही सब कुछ है जो तुम्हें दिया गया है। इस क्षण पर कार्य करो— जैसे यह क्षण ही सब कुछ है। इस तरह व्यवहार करो, जैसे यह क्षण ही जीवन-मृत्यु का प्रश्न है। वर्तमान के इसी वास्तविक क्षण में यह प्रयास करो कि कैसे तुम अपनी ऊर्जा को प्रेमपूर्ण बना सकते हो? कैसे इसी क्षण में इसे रूपांतरित कर सकते हो?

लोग मेरे पास आते हैं और वे अपने पूर्वजन्मों के बारे में जानना चाहते हैं। उनके पूर्वजन्म थे, लेकिन अब वह असंगत है। यह जांच-पड़ताल क्यों? तुम अपने अतीत के बारे में जानकर क्या करोगे? अब कुछ भी नहीं किया जा सकता है? अतीत, अतीत है और उसमें अब बदलाव नहीं हो सकता है। तुम किसी भी कीमत पर पीछे वापस नहीं लौट सकते हो। इसी कारण प्रकृति और इसकी प्रज्ञा तुम्हें पूर्वजन्मों को याद रखने की अनुमति नहीं देती है, अन्यथा तुम पागल हो जाते।

हो सकता है कि तुम एक लड़की के प्रेम में हो और अचानक तुम्हें पता लगता है कि पूर्वजन्म में यह लड़की तुम्हारी मां थी, तो चीजें बहुत अधिक जटिल बन जाएंगी। तब करोगे क्या? वह लड़की पूर्वजन्म में

तुम्हारी मां रही है और अब उसी के साथ प्रेम करना, तुम्हारे भीतर एक अपराध बोध पैदा होगा। उससे प्रेम न करना या उसे छोड़ देना भी पीड़ादायक होगा, क्योंकि आज तुम उससे प्रेम करते हो।

इसी कारण मैं कहता हूँ कि प्रकृति की अपनी प्रज्ञा है कि वह तुम्हें पूर्वजन्म का स्मरण रखने की अनुमति नहीं देती है, जब तक कि तुम उस स्थिति तक, उस बिंदु तक नहीं पहुंच जाते हो जहां उसकी अनुमति दी जा सके। जब तुम इतने अधिक ध्यानपूर्ण हो जाते हो कि तुम्हें कुछ भी परेशान नहीं कर सकता है, तभी वह द्वार खुलते हैं और तुम्हारे सभी पूर्वजन्म तुम्हारे सामने होते हैं। लेकिन यह एक स्वचालित यंत्रवत् प्रक्रिया है। यद्यपि यह यांत्रिक प्रक्रिया कभी कभी ठीक काम नहीं करती है। संयोग से कुछ ऐसे बच्चे जन्म लेते हैं, जो पूर्व जन्म को स्मरण कर सकते हैं, हालांकि उनके वह जीवन नष्ट हो चुके हैं।

कुछ वर्षों पूर्व एक लड़की मेरे पास लाई गई थी। उसे अपने पिछले दो जन्मों का स्मरण था। उस समय वह केवल तेरह वर्ष की थी, लेकिन यदि तुम उसकी आंखों में झांकते तो वे लगभग सत्तर वर्ष की दिखाई देती थी क्योंकि उसे दो पूर्वजन्मों का, लगभग पिछले सत्तर वर्षों का स्मरण था। उसका शरीर तेरह वर्ष का था, लेकिन उसका मन सत्तर वर्ष पुराना था। वह दूसरे बच्चों के साथ नहीं खेल पाती थी क्योंकि एक सत्तर वर्ष की बूढ़ी महिला बच्चों के साथ कैसे खेल सकती थी? वह एक बूढ़ी स्त्री की भांति ही बातचीत और व्यवहार करती थी और उसका मन उन बीते वर्षों की चिंताओं से भारग्रस्त था, बोझिल था। उसे इतने सही ढंग से अपने पूर्वजन्मों का स्मरण था कि उसके अतीत के उन दोनों परिवारों को भी खोजा जा सका। एक परिवार आसाम में था और दूसरा मध्य प्रदेश में। जब वह अपने पुराने परिवारों के संपर्क में आई तो वह उनके प्रति इतनी आसक्त हो उठी कि एक समस्या खड़ी हो गई कि अब उसे कहां रहना चाहिए?

मैंने उसके माता-पिता से कहा : 'इस लड़की को कम से कम तीन सप्ताह के लिए मेरे पास छोड़ दीजिए। मैं उसे इन पूर्व जन्मों को भुलाने में सहायता करने का प्रयास करूंगा, अन्यथा इस लड़की का जीवन एक विति बन जाएगा।' वह किसी व्यक्ति के साथ प्रेम में नहीं डूब सकती क्योंकि वह मन से बहुत बूढ़ी है। तुम्हारी वृद्धावस्था का संबंध तुम्हारी स्मृति के साथ होता है। यदि स्मृति का फैलाव सत्तर वर्ष का है, तब तुम सत्तर वर्ष के समान अनुभव करोगे। उसके चेहरे और उसकी शकल से ऐसा प्रतीत होता था जैसे उसे बहुत यातना दी गई हो। वह अपने केंद्र पर रुग्ण, बेचैन और बहुत असहज प्रतीत होती थी। उसके साथ प्रत्येक चीज़ गलत हो रही लगती थी।

लेकिन उसके माता-पिता उसकी इन बातों का आनंद ले रहे थे, क्योंकि लोगों का उनके पास आना-जाना शुरू हो गया था और समाचारपत्रों ने भी खबर छापना शुरू कर दिया था। वे इस प्रपंच का रस ले रहे थे। वे मेरी बात क्यों सुनते? और मैंने उनसे कहा था- 'यह लड़की पागल हो जाएगी।'

वे लोग फिर उस लड़की को कभी भी मेरे पास लेकर नहीं आए, लेकिन सात वर्षों बाद वे लोग आए और लड़की पागल हो गई थी। उन्होंने कहा : 'अब आप कुछ कीजिए।'

मैंने कहा : 'अब कोई भी कार्य करना असंभव है। अब केवल मृत्यु ही उसकी सहायता करेगी।'

तुम याद नहीं रख पाते, क्योंकि उन यादों को व्यवस्थित करना तुम्हारे लिए कठिन होगा। यहां तक कि केवल इस जीवन की यादों के साथ ही तुम इतनी अधिक अव्यवस्था उत्पन्न कर लेते हो तो कई जन्मों को याद रखने से तुम पूरी तरह पागल हो जाओगे। इसलिए इसके बारे में सोचो ही मत। यह बिल्कुल असंगत भी है।

संगत बात यही है कि यहीं और अभी मैं जियो और अपने ढंग से कार्य करो। यदि तुम किसी संबंध के द्वारा स्वयं पर कार्य कर सकते हो तो यह बहुत सुंदर है, परंतु यदि तुम किसी संबंध के द्वारा रूपांतरण नहीं कर सकते हो तब उसी प्रयास को एकांत में करो। यही दो मार्ग हैं : एक है प्रेम, प्रेम का अर्थ है कि तुम स्वयं पर संबंधों के माध्यम से कार्य कर रहे हो। दूसरा है ध्यान- ध्यान का अर्थ है कि तुम एकांत में स्वयं पर कार्य कर रहे हो। प्रेम और ध्यान ये दो मार्ग हैं। अनुभव करो, महसूस करो कि तुम्हारे लिए कौन-सा अनुकूल होगा? तब अपनी समस्त ऊर्जा को उसमें लगा दो और उसी मार्ग पर आगे बढ़ो।

-सफ़ेद बादलों का मार्ग, प्रवचन-7

Above article is translated from English book, the link of audio & book in English are shared below -

Book . [My way ; the Way of white clouds](#)

Audio . [My Way - the way of white clouds - 7](#)



एक अशांत हो, तो दूसरा शांत रहे

-ओशो

जब आप अशांत हो जाते हैं, तब शांत होना कठिन है। लेकिन इतनी देर रुकने की जरूरत क्या है?

शांति तो साधी जा सकती है। शांति को तो जीवन का उठते-बैठते, रोजमर्रा का भोजन बनाया जा सकता है।

इसको ध्यान रखें कि आपको शांत रहना है। घर लौटे हैं, तो दरवाजे पर दो क्षण रुक जाएं, क्योंकि पत्नी कुछ कहेगी। वह दिनभर से अशांत है, वह अशांति आप पर फेंकेगी। दो क्षण रुक जाएं, तैयार हो जाएं। तैयारी का मतलब यह कि मैं शांत रहूंगा, चाहे पत्नी कुछ भी कहे, मैं इसको नाटक से ज्यादा नहीं समझूंगा। दया करूंगा, क्योंकि बेचारी परेशान है।

मुल्ला नसरुद्दीन की लड़की का विवाह हुआ। तो लड़की दहाड़ मार-मारकर, छाती पीट-पीटकर रो रही थी। सब समझा रहे थे, वह सुन नहीं रही थी। फिर मुल्ला उसके पास गया। उसने कहा, बेटी, तू मत रो; तुझे ले जाने वाले रोएंगे। तू मेरी बेटी है; तू बिल्कुल मत घबड़ा; थोड़ी देर की बात है। थोड़ा धैर्य रख!

जीवन में चारों तरफ विक्षिप्त लोग हैं, दुखी लोग हैं। वे अपने दुख और विक्षिप्तता को फेंक रहे हैं। फेंकने के सिवाय उनके पास जीने का कोई ढंग नहीं है, उपाय नहीं है। फेंकते हैं, तो थोड़ा जी लेते हैं। यह उनकी कैथार्सिस है। अगर आप उसके शिकार हो जाते हैं, अगर आप उससे उद्विग्न होते हैं, अशांत होते हैं, तो फिर आपके जीवन में शांति का स्वर कभी भी नहीं बज पाएगा।

क्योंकि चारों तरफ अशांत लोग हैं, तो आपको शांति साधनी होगी, और आपको सजग रहना होगा। चारों तरफ बीमार लोग हैं, आपको अपने चारों तरफ एक कवच निर्मित करना होगा, एक मिल्यू, एक वातावरण आपके चारों तरफ, कि चाहे कोई कुछ भी फेंके, आप अपनी शांति में थिर रहेंगे। थोड़े से होश की जरूरत है। यह हो जाता है।

इसे थोड़ा प्रयोग करके देखें। जब पत्नी नाराज हो रही हो, तब आप खड़े होकर देखें कि आप नाटक देख रहे हैं। इससे वह और भी नाराज होगी, यह भी ध्यान रखना। मगर तब आप और प्रसन्न होकर उसको देखना।

अगर दो व्यक्तियों में एक व्यक्ति क्रोधित हो रहा हो और दूसरा नाटक की तरह देखता रहे, तो यह नाटक ज्यादा देर चल नहीं सकता। यह बढ़ेगा, उबलेगा, लेकिन फूट जाएगा, बिखर जाएगा, क्योंकि इसे बढ़ाने के लिए दोनों तरफ से सहारा चाहिए। समझदार **पति**-पत्नी निर्णय कर लेते हैं कि जब एक उपद्रव करेगा, तो दूसरा शांत रहेगा।

मुल्ला नसरुद्दीन किसी को कह रहा था कि मेरे घर में कभी झगड़ा नहीं होता। दूसरे ने कहा कि यह मानने योग्य नहीं है। यह असंभव है कि घर हो और झगड़ा न हो! घर यानी झगड़ा। तुम झूठ बोल रहे हो। नसरुद्दीन ने कहा कि नहीं, हमने पहले ही दिन एक बात तय कर ली, और वह बात यह तय कर ली कि सब छोटे-छोटे मसले पत्नी तय करेगी, बड़े-बड़े मसले मैं तय करूंगा। बड़े-बड़े मसले आज तक आए नहीं और कभी आएंगे भी नहीं, क्योंकि पहले ही पत्नी तय कर देती है कि सब छोटे मसले हैं। तो वही तय कर रही है।

इंग्लैंड में एक आदमी एक सौ बीस वर्ष तक जीया। तो उसकी एक सौ बीसवीं वर्षगांठ पर लोगों ने उससे पूछा कि कैसे तुम इतने स्वस्थ हो?

उसने कहा कि हमने एक निर्णय कर लिया शादी के वक्त कि जब भी पत्नी नाराज होगी, मैं घर के बाहर चला जाऊंगा। तो यह अस्सी साल की घर के बाहर की जिंदगी, यह मेरे स्वास्थ्य का कारण है! क्योंकि मैं अक्सर बाहर ही घूमता रहा हूं। घर तो कभी-कभी भीतर जाता हूं, फिर ज्यादातर मुझे बाहर ही, आउट डोर!

चारों तरफ विक्षिप्तता है सभी संबंधों में। और अगर आप अपने को समझालकर नहीं चल रहे हैं, तो इतनी विक्षिप्त दुनिया में आप शांत नहीं रह सकते। और दूसरे को जिम्मेवार मत समझें। दूसरा जिम्मेवार है नहीं; वह अपने से परेशान है। कोई आपको परेशान करना नहीं चाह रहा है; वह अपने से परेशान है। परेशानी कोई कहां फेंके! जो निकट हैं, उन्हीं पर फेंकी जाती है।

तो जो व्यक्ति बिना अशांत हुए, सारी उपद्रवों की स्थिति में एक सूत्र ध्यान रखता है कि मुझे शांत रहना है चाहे कुछ भी हो, वह थोड़े ही दिनों में इस कला में पारंगत हो जाता है।

-गीता दर्शन सोलहवा अध्याय, दूसरा प्रवचन



हंसते व जीवंत धर्म के प्रतीक कृष्ण

-ओशो



कृष्ण के व्यक्तित्व में आज के युग के लिए क्या-क्या विशेषताएं हैं और उनके व्यक्तित्व का क्या महत्व हो सकता है आज? इस पर कुछ प्रकाश डालें?

कृष्ण का व्यक्तित्व बहुत अनूठा है। अनूठेपन की पहली बात तो यह है कि कृष्ण हुए तो अतीत में हैं, लेकिन हैं भविष्य के। मनुष्य अभी भी इस योग्य नहीं हो पाया कि कृष्ण का समसामयिक बन सके। अभी भी कृष्ण मनुष्य की समझ के बाहर हैं। भविष्य में ही यह संभव हो पाएगा कि कृष्ण को हम समझ पाएं।

इसके कुछ कारण हैं। सबसे बड़ा कारण तो यह है कि कृष्ण अकेले ही ऐसे व्यक्ति हैं जो धर्म की परम गहराइयों और ऊंचाइयों पर होकर भी गंभीर नहीं हैं, उदास नहीं हैं, रोते हुए नहीं हैं। साधारणतः संत का लक्षण ही रोता हुआ होना है..जिंदगी से उदास, हारा हुआ, भागा हुआ। कृष्ण अकेले ही नाचते हुए व्यक्ति हैं... हंसते हुए, गीत गाते हुए। अतीत का सारा धर्म दुखवादी था। कृष्ण को छोड़ दें तो अतीत का सारा धर्म उदास, आंसुओं से भरा हुआ था। हंसता हुआ धर्म, जीवन को समग्र रूप से स्वीकार करने वाला धर्म अभी पैदा होने को है। निश्चित ही पुराना धर्म मर गया है और पुराना ईश्वर, जिसे हम अब तक ईश्वर समझते थे, जो हमारी धारणा थी ईश्वर की, वह भी मर गई है।

जीसस के संबंध में कहा जाता है कि वह कभी हंसे नहीं। शायद जीसस का यह उदास व्यक्तित्व और सूली पर लटका हुआ उनका शरीर ही हम दुखी-चित्त लोगों को बहुत आकर्षण का कारण बन गया। महावीर या बुद्ध, बहुत गहरे अर्थों में, इस जीवन के विरोधी हैं। कोई और जीवन है परलोक में, कोई मोक्ष है, उसके पक्षपाती हैं। समस्त धर्मों ने दो हिस्से कर रखे थे जीवन के..एक वह जो स्वीकार योग्य है और एक वह जो इनकार के योग्य है।

कृष्ण अकेले हैं जो समग्र जीवन को पूरा ही स्वीकार कर लेते हैं। जीवन की समग्रता की स्वीकृति उनके व्यक्तित्व में फलित हुई है। इसलिए इस देश ने और सभी अवतारों को आंशिक अवतार कहा है, कृष्ण को पूर्ण

अवतार कहा है। राम भी अंश ही हैं परमात्मा के, लेकिन कृष्ण पूरे ही परमात्मा हैं। और यह कहने का, यह सोचने का, ऐसा समझने का कारण है। और वह कारण यह है कि कृष्ण ने सभी कुछ आत्मसात कर लिया है।

अलबर्ट श्वीत्जर ने भारतीय धर्म की आलोचना में एक बड़ी कीमत की बात कही है, और वह यह कि भारत का धर्म जीवन-निषेधक, लाइफ निगेटिव है। यह बात बहुत दूर तक सच है, यदि कृष्ण को भुला दिया जाए। और यदि कृष्ण को भी विचार में लिया जाए तो यह बात एकदम ही गलत हो जाती है। और श्वीत्जर यदि कृष्ण को समझते तो ऐसी बात न कह पाते। लेकिन कृष्ण की कोई व्यापक छाया भी हमारे चित्त पर नहीं पड़ी है। वे अकेले दुख के एक महासागर में नाचते हुए एक छोटे से द्वीप हैं। या ऐसा हम समझें कि उदास और निषेध और दमन और निंदा के बड़े मरुस्थल में एक बहुत छोटे से नाचते हुए मरुद्यान हैं। वे हमारे पूरे जीवन की धारा को नहीं प्रभावित कर पाए। हम ही इस योग्य न थे, हम उन्हें आत्मसात न कर पाए।

मनुष्य का मन अब तक तोड़ कर सोचता रहा है, द्रंद्र करके सोचता रहा है। शरीर को इनकार करना है, आत्मा को स्वीकार करना है। तो आत्मा और शरीर को लड़ा देना है। परलोक को स्वीकार करना है, इहलोक को इनकार करना है। तो इहलोक और परलोक को लड़ा देना है।

स्वभावतः, यदि हम शरीर का इनकार करेंगे, तो जीवन उदास हो जाएगा। क्योंकि जीवन के सारे रस-स्रोत और सारा स्वास्थ्य और जीवन का सारा संगीत और सारी संवेदनाएं शरीर से आ रही हैं। शरीर को जो धर्म इनकार कर देगा, वह पीतवर्ण हो जाएगा, रक्तशून्य हो जाएगा। उस पर से लाली खो जाएगी। वह पीले पत्ते की तरह सूखा हुआ धर्म होगा। उस धर्म की मान्यता भी जिनके मन में गहरी बैठेगी, वे भी पीले पत्तों की तरह गिरने की तैयारी में संलग्न, मरने के लिए उत्सुक और तैयार हो जाएंगे।

कृष्ण अकेले हैं जो शरीर को उसकी समस्तता में स्वीकार कर लेते हैं, उसकी टोटेलिटी में। यह एक आयाम में नहीं, सभी आयाम में सच है। शायद कृष्ण को छोड़ कर... कृष्ण को छोड़ कर, और पूरे मनुष्यता के इतिहास में जरथुस्त एक दूसरा आदमी है, जिसके बाबत यह कहा जाता है कि वह जन्म लेते से ही हंसा। सभी बच्चे रोते हैं। एक बच्चा सिर्फ मनुष्य-जाति के इतिहास में जन्म लेकर हंसा है। यह सूचक है। यह सूचक है इस बात का कि अभी हंसती हुई मनुष्यता पैदा नहीं हो पाई। और कृष्ण तो हंसती हुई मनुष्यता को ही स्वीकार हो सकते हैं। इसलिए कृष्ण का बहुत भविष्य है। फिर फ्रायड-पूर्व धर्म की जो दुनिया थी, वह फ्रायड-पश्चात नहीं हो सकती है। एक बड़ी क्रांति घटित हो गई है, और एक बड़ी दरार पड़ गई है मनुष्य की चेतना में। हम जहां थे फ्रायड के पहले, अब हम वहीं कभी भी नहीं हो सकेंगे। एक नया शिखर छू लिया गया है और एक नई समझ पैदा हो गई है। वह समझ समझ लेनी चाहिए।

पुराना धर्म सिखाता था आदमी को दमन और सप्रेशन। काम है, क्रोध है, लोभ है, मोह है, सभी को दबाना है और नष्ट कर देना है। और तभी आत्मा उपलब्ध होगी और तभी परमात्मा उपलब्ध होगा। यह लड़ाई बहुत लंबी चली। इस लड़ाई के हजारों साल के इतिहास में भी मुश्किल से दस-पांच लोग हैं जिनको हम कह पाएं कि उन्होंने परमात्मा को पा लिया। एक अर्थ में यह लड़ाई सफल नहीं हुई। क्योंकि अरबों-खरबों लोग बिना परमात्मा को पाए मरे हैं। जरूर कहीं कोई बुनियादी भूल थी। यह ऐसा ही है जैसे कि कोई माली पचास हजार पौधे लगाए और एक पौधे में फूल आ जाएं, और फिर भी हम उस माली के शास्त्र को मानते चले जाएं, और हम कहें कि देखो एक पौधे में फूल आए! और हम इस बात का ख्याल ही भूल जाएं कि पचास करोड़ पौधों में अगर एक पौधे में फूल आते हैं, तो यह माली की वजह से न आए होंगे, यह माली से किसी तरह बच गया होगा पौधा, इसलिए आ गए हैं। क्योंकि माली का प्रमाण तो बाकी पचास करोड़ पौधे हैं जिनमें फूल नहीं आते, पत्ते नहीं लगते, सूखे तूट रह जाते हैं।

एक बुद्ध, एक महावीर, एक क्राइस्ट अगर परमात्मा को उपलब्ध हो जाते हैं, द्रंद्रग्रस्त धर्मों के बावजूद भी, तो यह कोई धर्मों की सफलता का प्रमाण नहीं है। धर्मों की सफलता का प्रमाण तो तब होगा, माली तो तब सफल समझा जाएगा, जब पचास करोड़ पौधों में फूल लगें और एक में न लग पाएं, तो क्षमा योग्य है। कहा जा सकेगा कि यह पौधे की गलती हो गई। इसमें माली की गलती नहीं हो सकती। पौधा बच गया होगा माली से, इसलिए सूख गया है, इसलिए फूल नहीं आ सके।

फ्रायड के साथ ही एक नई चेतना का जन्म हुआ और वह यह कि दमन गलत है। और दमन मनुष्य को आत्महिंसा में डाल देता है। आदमी अपने से ही लड़ने लगे तो सिर्फ नष्ट हो सकता है। अगर मैं अपने बाएं और दाएं हाथ को लड़ाऊं तो न तो बायां जीतेगा, न दायां जीतेगा, लेकिन मैं हार जाऊंगा। दोनों हाथ लड़ेंगे और मैं नष्ट हो जाऊंगा। तो दमन ने मनुष्य को आत्मघाती बना दिया, उसने अपनी ही हत्या अपने हाथों कर ली।

कृष्ण, फ्रायड के बाद जो चेतना का जन्म हुआ है और जो समझ आई है, उस समझ के लिए कृष्ण ही अकेले हैं जो सार्थक मालूम पड़ सकते हैं। क्योंकि पुराने मनुष्य-जाति के इतिहास में कृष्ण अकेले हैं जो दमनवादी नहीं हैं। वे जीवन के सब रंगों को स्वीकार कर लिए हैं। वे प्रेम से भागते नहीं। वे पुरुष होकर स्त्री से पलायन नहीं करते। वे परमात्मा को अनुभव करते हुए युद्ध से विमुख नहीं होते। वे करुणा और प्रेम से भरे

होते हुए भी युद्ध में लड़ने की सामर्थ्य रखते हैं। अहिंसक चित्त है उनका, फिर भी हिंसा के ठेठ दावानल में उतर जाते हैं। अमृत की स्वीकृति है उन्हें, लेकिन जहर से कोई भय भी नहीं है। और सच तो यह है, जिसे भी अमृत का पता चल गया है उसे जहर का भय मिट जाना चाहिए। क्योंकि ऐसा अमृत ही क्या जो जहर से फिर उरता चला जाए! और जिसे अहिंसा का सूत्र मिल गया उसे हिंसा का भय मिट जाना चाहिए। ऐसी अहिंसा ही क्या जो अभी हिंसा से भी भयभीत और घबड़ाई हुई हो! और ऐसी आत्मा ही क्या जो शरीर से भी डरती हो और बचती हो! और ऐसे परमात्मा का क्या अर्थ जो सारे संसार को अपने आलिंगन में न ले सकता हो। तो कृष्ण द्वाद को एक साथ स्वीकार कर लेते हैं और इसलिए द्वाद के अतीत हो जाते हैं। ट्रांससेंडेंस जो है, अतीत तो हो जाना है, यह द्वाद में पड़ कर कभी संभव नहीं है; दोनों को एक साथ स्वीकार कर लेने से संभव है।

तो भविष्य के लिए कृष्ण की बड़ी सार्थकता है। और भविष्य में कृष्ण का मूल्य निरंतर बढ़ता ही जाने को है। जब कि सबके मूल्य फीके पड़ जायेंगे और द्वाद भरे धर्म जब कि पीछे अंधेरे में डूब जायेंगे और इतिहास की राख उन्हें दबा देगी, तब भी कृष्ण का अंगार चमकता हुआ रहेगा। और भी निखरेगा क्योंकि पहली दफे मनुष्य इस योग्य होगा कि कृष्ण को समझ पाए। कृष्ण को समझना बड़ा कठिन है। आसान है यह बात समझना कि एक आदमी संसार को छोड़ कर चला जाए और शांत हो जाए। कठिन है इस बात को समझना कि संसार के संघर्ष में, बीच में खड़ा होकर और शांत हो। आसान है यह बात समझनी कि एक आदमी विरक्त हो जाए, आसक्ति के संबंध तोड़ कर भाग जाए और उसमें एक पवित्रता का जन्म हो। कठिन है यह बात समझनी कि जीवन के सारे उपद्रव के बीच, जीवन के सारे उपद्रव में अडिग, जीवन के सारे धूल-धवांस, कोहरे और आधियों में खड़ा हुआ दीया हिलता न हो, उसकी लौ कंपती न हो. कठिन है यह समझना। इसलिए कृष्ण को समझना बहुत कठिन था। निकटतम जो कृष्ण के थे वे भी नहीं समझ सकते थे। लेकिन पहली दफा एक महान प्रयोग हुआ है। पहली दफा आदमी ने अपनी शक्ति का पूरा परीक्षण कृष्ण में किया है। ऐसा परीक्षण कि संबंधों में रहते हुए असंग रहा जा सके, और युद्ध के क्षण पर भी करुणा न मिटे। और हिंसा की तलवार हाथ में हो, तो भी प्रेम का दीया मन से न बुझे।

इसलिए कृष्ण को जिन्होंने पूजा भी है, जिन्होंने कृष्ण की आराधना भी की है, उन्होंने भी कृष्ण के टुकड़े-टुकड़े करके किया है। सूरदास के कृष्ण कभी बच्चे से बड़े नहीं हो पाते। बड़े कृष्ण के साथ खतरा है। सूरदास बरदाश्त न कर सकेंगे। वह बालकृष्ण को ही...। क्योंकि बालकृष्ण अगर गांव की स्त्रियों को छेड़ आता है तो हमें बहुत कठिनाई नहीं है। लेकिन युवा कृष्ण जब गांव की स्त्रियों को छेड़ देगा तो फिर बहुत मुश्किल हो जाएगा। फिर हमें समझना बहुत मुश्किल हो जाएगा। क्योंकि हम अपने ही तल पर तो समझ सकते हैं। हमारे अपने तल के अतिरिक्त समझने का हमारे पास कोई उपाय भी नहीं है। तो कोई है जो कृष्ण के एक रूप को चुन लेगा, कोई है जो दूसरे रूप को चुन लेगा। गीता को प्रेम करने वाले भागवत की उपेक्षा कर जायेंगे, क्योंकि भागवत का कृष्ण और ही है। भागवत को प्रेम करने वाले गीता की चर्चा में न पड़ेंगे, क्योंकि कहां राग-रंग और कहां रास और कहां युद्ध का मैदान! उनके बीच कोई तालमेल नहीं है। शायद कृष्ण से बड़े विरोधों को एक साथ पी लेने वाला कोई व्यक्तित्व ही नहीं है। इसलिए कृष्ण की एक-एक शक्त को लोगों ने



पकड़ लिया है। जो जिसे प्रीतिकर लगी है, उसने छांट लिया है, बाकी शकल को उसने इनकार कर दिया है।

गांधी गीता को माता कहते हैं, लेकिन गीता को आत्मसात नहीं कर सके। क्योंकि गांधी की अहिंसा युद्ध की संभावनाओं को कहां रखेगी? तो गांधी उपाय खोजते हैं; वे कहते हैं कि यह जो युद्ध है, यह सिर्फ रूपक है, यह कभी हुआ नहीं। यह मनुष्य के भीतर अच्छाई और बुराई की लड़ाई है। यह जो कुरुक्षेत्र है, यह कहीं कोई बाहर युद्ध का मैदान नहीं है, और ऐसा नहीं है कि कृष्ण ने कहीं अर्जुन को किसी बाहर के युद्ध में लड़ाया हो। यह तो भीतर के युद्ध की रूपक कथा है। यह एक पैरेबल है, यह एक कहानी है, यह एक प्रतीक है। गांधी को कठिनाई है। क्योंकि गांधी का जैसा मन है, उसमें तो अर्जुन ही ठीक मालूम पड़ेगा। अर्जुन के मन में बड़ी अहिंसा का उदय हुआ है। वह युद्ध छोड़ कर भाग जाने को तैयार है। वह कहता है: अपनों को मारने से फायदा क्या? और वह कहता है: इतनी हिंसा करके धन पाकर भी, यश पाकर भी, राज्य पाकर भी मैं क्या करूंगा? इससे तो बेहतर है कि मैं सब छोड़ कर भिखमंगा हो जाऊं। इससे तो बेहतर है कि मैं भाग जाऊं और सारे दुख वरण कर लूं, लेकिन हिंसा में न पड़ूं। इससे मेरा मन बड़ा कांपता है। इतनी हिंसा अशुभ है।

कृष्ण की बात गांधी की पकड़ में कैसे आ सकती है? क्योंकि कृष्ण उसे समझाते हैं कि तू लड़। और लड़ने के लिए वे जो तर्क देते हैं, वह ऐसा अनूठा है कि इसके पहले कभी भी नहीं दिया गया था। उसको परम अहिंसक ही दे सकता है, उस तर्क को।

कृष्ण का तर्क यह है कि जब तक तू ऐसा मानता है कि कोई मर सकता है, तब तक तू आत्मवादी नहीं है। तब तक तुझे पता ही नहीं है कि जो भीतर है, न वह कभी मरा है, न कभी मर सकता है। अगर तू सोचता है कि मैं मार सकूंगा, तो तू बड़ी भ्रांति में है, बड़े अज्ञान में है। क्योंकि मारने की धारणा ही भौतिकवादी की धारणा है। जो जानता है, उसके लिए कोई मरता नहीं है। तो अभिनय है..कृष्ण उससे कह रहे हैं..मरना और मारना लीला है, एक नाटक है।

इस संदर्भ में यह समझ लेना उचित होगा कि राम के जीवन को हम चरित्र कहते हैं। राम बड़े गंभीर हैं। उनका जीवन लीला नहीं है, चरित्र ही है। लेकिन कृष्ण गंभीर नहीं हैं। कृष्ण का चरित्र नहीं है वह, कृष्ण की लीला है। राम मर्यादाओं में बंधे हुए व्यक्ति हैं, मर्यादाओं के बाहर वे एक कदम न बढ़ेंगे। मर्यादा पर वे सब कुर्बान कर देंगे। कृष्ण के जीवन में मर्यादा जैसी कोई चीज नहीं है। अमर्यादा। पूर्ण स्वतंत्र। जिसकी कोई सीमा नहीं, जो कहीं भी जा सकता है। ऐसी कोई जगह नहीं आती जहां वह रुके, ऐसी कोई सीमा नहीं आती जहां वह भयभीत हो और कदम को ठहराए। यह अमर्यादा भी कृष्ण के आत्म-अनुभव का अंतिम फल है। तो हिंसा भी बेमानी हो गई है वहां, क्योंकि हिंसा हो नहीं सकती। और जहां हिंसा ही बेमानी हो गई हो वहां अहिंसा भी बेमानी हो जाती है। क्योंकि जब तक हिंसा सार्थक है और हिंसा हो सकती है, तभी तक अहिंसा भी सार्थक है। असल में हिंसक अपने को मानना भौतिकवाद है, अहिंसक अपने को मानना भी उसी भौतिकवाद का दूसरा छोर है। एक मानता है मैं मार डालूंगा, एक मानता है मैं मारूंगा नहीं, मैं मारने को राजी ही नहीं हूँ। लेकिन दोनों मानते हैं कि मारा जा सकता है।

ऐसा अध्यात्म जो युद्ध को भी खेल मान लेता है और जो जीवन की सारी दिशाओं को...राग की, प्रेम की, भोग की, काम की, योग की, ध्यान की...समस्त दिशाओं को एक साथ स्वीकार कर लेता है, इस समग्रता के दर्शन को समझने की संभावना रोज बढ़ती जा रही है। क्योंकि अब हमें कुछ बातें पता चली हैं, जो हमें कभी भी पता नहीं थीं। लेकिन कृष्ण को निश्चित ही पता रही हैं।

जैसे हमें आज जाकर पता चला है कि शरीर और आत्मा जैसी दो चीजें नहीं हैं। आत्मा का जो छोर दिखाई पड़ता है, वह शरीर है; और शरीर का जो छोर दिखाई नहीं पड़ता है, वह आत्मा है। परमात्मा और संसार जैसी दो चीजें नहीं हैं। परमात्मा और प्रकृति जैसा द्वंद्व नहीं है कहीं। परमात्मा का जो हिस्सा दृश्य हो गया है, वह प्रकृति है। और जो अब भी अदृश्य है, वह परमात्मा है। कहीं भी ऐसी कोई जगह नहीं है जहां प्रकृति खत्म होती है और परमात्मा शुरू होता है। बस प्रकृति ही लीन होते-होते, होते-होते परमात्मा बन जाती है। परमात्मा ही प्रकट होते-होते-होते प्रकृति बन जाता है। अद्वैत का यही अर्थ है। और इस अद्वैत की अगर हमें धारणा स्पष्ट हो जाए, इसकी प्रतीति हो जाए, तो कृष्ण को समझा जा सकता है।

साथ ही भविष्य में और क्यों कृष्ण के मूल्य और कृष्ण की सार्थकता बढ़ने को है और कृष्ण क्यों मनुष्य के और निकट आ जाएंगे? अब दमन संभव नहीं हो सकेगा। बड़े लंबे संघर्ष और बड़े लंबे ज्ञान की खोज के बाद ज्ञात हो सका है कि जिन शक्तियों से हम लड़ते हैं, वे शक्तियां हमारी हैं, हम ही हैं। इसलिए उनसे लड़ने से बड़ा कोई पागलपन नहीं हो सकता। और यह भी ज्ञात हुआ है कि जिससे हम लड़ते हैं, हम सदा के लिए उसी से घिरे रह जाते हैं। और यह भी ज्ञात हुआ है कि जिससे हम लड़ते हैं उसे हम कभी रूपांतरित नहीं कर पाते। उसका ट्रांसफॉर्मेशन नहीं होता।

अगर कोई व्यक्ति यौन से लड़ेगा तो उसके जीवन में ब्रह्मचर्य कभी भी घटित नहीं हो सकता। अगर ब्रह्मचर्य घटित हो सकता है तो एक ही उपाय है कि वह अपनी काम की ऊर्जा को कैसे रूपांतरित करे। काम

की ऊर्जा से लड़ना नहीं है, काम की ऊर्जा से सहयोग करना है। काम की ऊर्जा से दुश्मनी नहीं लेनी, काम की ऊर्जा से मैत्री साधनी है। क्योंकि हम सिर्फ उसी को बदल सकते हैं जिससे हमारी मैत्री है। जिसके हम शत्रु हो गए उसको बदलने का सवाल नहीं है। जिसके हम शत्रु हो गए उसको समझने का भी उपाय नहीं है। समझ भी हम उसे ही सकते हैं जिससे हमारी मैत्री है।

तो जो हमें निकृष्टतम दिखाई पड़ रहा है वह भी श्रेष्ठतम का ही छोर है। पर्वत का जो बहुत ऊपर का शिखर है, वह, और पर्वत के पास की जो बहुत गहरी खाई है, ये दो घटनाएं नहीं हैं। ये एक ही घटना के दो हिस्से हैं। यह जो खाई बनी है, यह पर्वत के ऊपर उठने से बनी है। यह जो पर्वत ऊपर उठ सका है, यह खाई के बनने से ऊपर उठ सका है। ये दो चीजें नहीं हैं। ये पर्वत और खाई हमारी भाषा में दो हैं, अस्तित्व में एक ही चीज के दो छोर हैं।

नीचो का एक बहुत कीमती वचन है। नीचो ने कहा है कि जिस वृक्ष को आकाश की ऊंचाई छूनी हो, उसे अपनी जड़ें पाताल की गहराई तक पहुंचानी पड़ती हैं। और अगर कोई वृक्ष अपनी जड़ों को पाताल तक पहुंचाने से डरता हो, तो उसे आकाश तक पहुंचने की आकांक्षा भी छोड़ देनी पड़ती है। असल में जितनी ऊंचाई, उतने ही गहरे भी जाना पड़ता है। जितना ऊंचा जाना हो उतना ही नीचे भी जाना पड़ता है। नीचाई और ऊंचाई दो चीजें नहीं हैं, एक ही चीज के दो आयाम हैं और वे सदा समानुपाती हैं, एक ही अनुपात में बढ़ते हैं।

मनुष्य के मन ने सदा चाहा कि वह चुनाव कर ले। उसने चाहा कि स्वर्ग को बचा ले और नरक को छोड़ दे। उसने चाहा कि शांति को बचा ले, तनाव को छोड़ दे। उसने चाहा शुभ को बचा ले, अशुभ को छोड़ दे। उसने चाहा प्रकाश ही प्रकाश रहे, अंधकार न रह जाए। मनुष्य के मन ने अस्तित्व को दो हिस्सों में तोड़ कर एक हिस्से का चुनाव किया और दूसरे का इनकार किया। इससे द्वंद्वपैदा हुआ, इससे द्वैत पैदा हुआ। कृष्ण दोनों को एक साथ स्वीकार करने के प्रतीक हैं। और जो दोनों को एक साथ स्वीकार करता है, वही पूर्ण हो सकता है। नहीं तो अपूर्ण ही रह जाएगा। जितने को चुनेगा, उतना हिस्सा रह जाएगा; और जिसको इनकार करेगा, सदा उससे बंधा रहेगा। उससे बाहर नहीं जा सकता है। जो व्यक्ति काम का दमन करेगा, उसका चित्त कामुक से कामुक होता चला जाता है। इसलिए जो संस्कृति, जो धर्म काम का दमन सिखाता है, वह संस्कृति कामुकता पैदा करवाती है।

काश कृष्ण को माना जा सका होता, तो शायद दुनिया से कामुकता विदा हो गई होती। लेकिन कृष्ण को नहीं माना जा सका। बल्कि हमने न मालूम कितने-कितने रूपों में कृष्ण के उन हिस्सों का इनकार किया जो काम की स्वीकृति हैं। लेकिन अब यह संभव हो जाएगा, क्योंकि अब हमें दिखाई पड़ना शुरू हुआ है कि काम की ऊर्जा, वह जो सेक्स एनर्जी है, वही ऊर्ध्वगमन करके ब्रह्मचर्य के उच्चतम शिखरों को छू पाती है। जीवन में किसी से भागना नहीं है और जीवन में किसी को छोड़ना नहीं है, जीवन को पूरा ही स्वीकार करके जीना है। उसको जो समग्रता से जीता है वह जीवन की पूर्णता को उपलब्ध हो जाता है।

इसलिए मैं कहता हूँ कि भविष्य के संदर्भ में कृष्ण का बहुत मूल्य है और हमारा वर्तमान रोज उस भविष्य के करीब पहुंच रहा है जहां कृष्ण की प्रतिमा निखरती जाएगी और एक हंसता हुआ धर्म, एक नाचता हुआ धर्म जल्दी निर्मित होगा। तो उस धर्म की बुनियादों में कृष्ण का पत्थर जरूर रहने को है।

— कृष्ण स्मृति-1



नटराज ध्यान

नटराज-नृत्य एक संपूर्ण ध्यान है। ६९ मिनट के इस नृत्य ध्यान के तीन चरण हैं, विशेष संगीत के साथ। इस ध्यान-विधि का मार्ग नृत्य में खोकर मौन व विश्रान्त हो भीतर प्रवेश करना है। अनर्तन को भूल जायें, अहंकार के केंद्र को भूल जायें, नृत्य ही हो जायें। यही ध्यान है। नृत्य में इतना महसूस उतर जायें कि आप पूर्णतया भूल जायें कि नृत्य आप कर रहे हैं। यह महसूस करें कि आप नृत्य हैं। ढुंढ शेष न रहे, और तब यह ध्यान हो जाता है।

और यदि विभाजन बचा तो फिर यह केवल व्यायाम है: अच्छा है, स्वास्थ्यवर्धक है परंतु इसे दिव्य नहीं कहा जा सकता। यह साधारण नृत्य है। नृत्य अपने आप में शुभ है और जब तक चलता है शुभ है। इसके पश्चात आप ताजा व नया अनुभव करेंगे। परंतु अभी यह ध्यान न हुआ। नर्तक को विदा होना होगा जब तक कि केवल नृत्य न बचे; किनारे पर खड़े मत रहें, दर्शक मात्र न रहें। सहभागी बनें। और खेलपूर्ण रहें। खेलपूर्ण शब्द को सदा स्मरण रखें और यह मेरी देशना का मूल सूत्र है।

पहला चरण: ४० मिनट

ऑखें बंद रखें, इस प्रकार नाचें जैसे आविष्ट हो गए हों। अपने पूरे चेतन को उभरकर नृत्य में प्रवेश करने दें। न तो नृत्य को नियंत्रित करें, और न ही जो हो रहा है उसके साक्षी बनें। बस नृत्य में पूरी तरह डूब जाएं।

दूसरा चरण: २० मिनट

ऑखें बंद रखते हुए तत्क्षण लेट जाएं। शांत और निश्चल रहें।

तीसरा चरण: ९ मिनट

उत्सव-भाव से नाचें, आनंदित हों और अहोभाव व्यक्त करें।



Natraj Nirdesh
/Instructions

Natraj Dhyan
/Meditation



प्रेम मुक्ति है और मोह..बंधन

ओशो द्वारा हस्तलिखित पत्र

प्रिय कोठारी जी,
स्नेह।

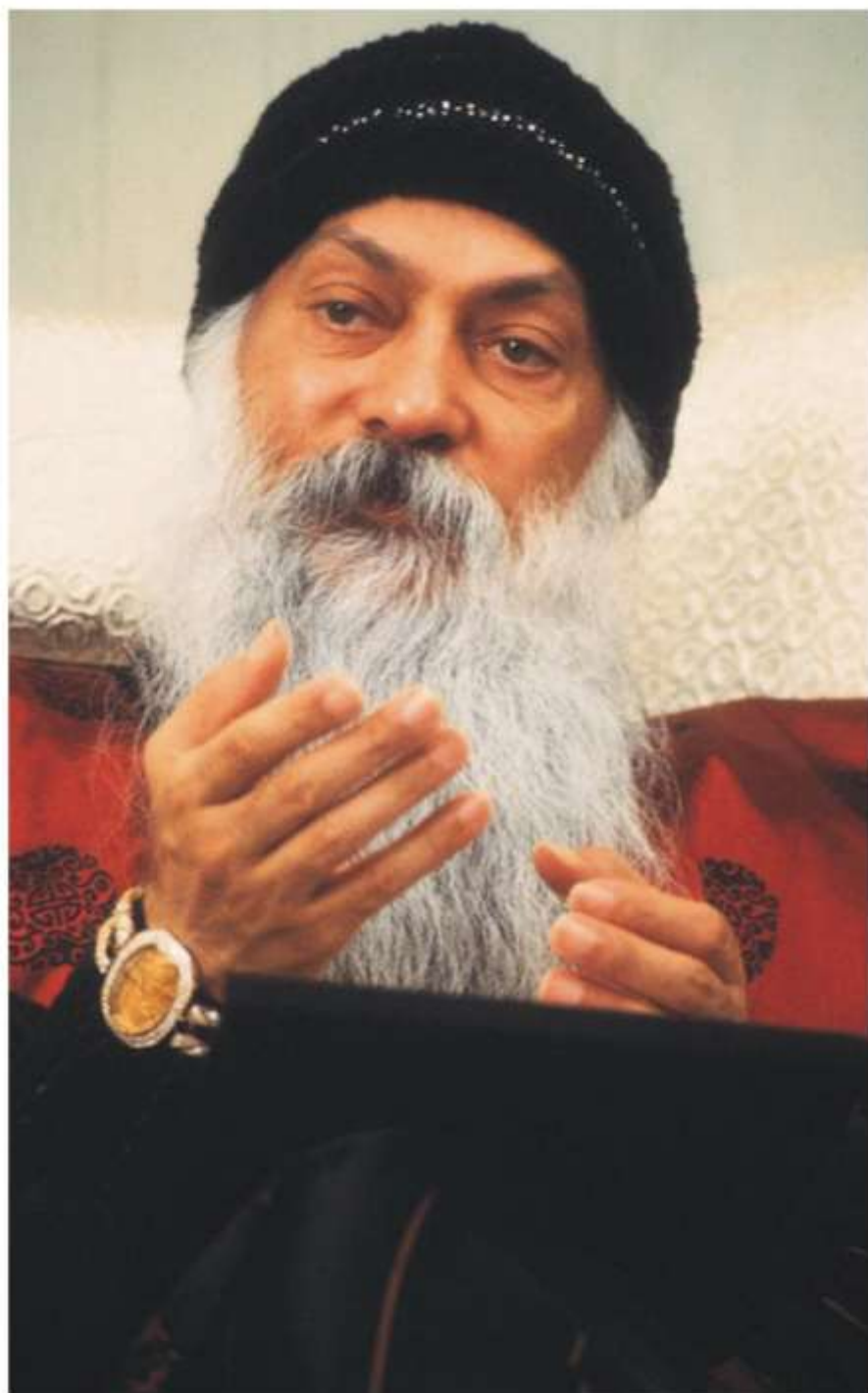
प्रेम व मोह में भेद पूछा है।
मैं सब भेदों के पीछे एक ही भेद देखता हूँ।
वह एक मूल भेद ही सबमें प्रकट होता है।
वह भेद क्या है?
मैं या तो अपने को जानता हूँ या नहीं जानता हूँ।
'मैं कौन हूँ?' यह न जानने से जो प्रीति पैदा होती है, वह मोह है।
'मैं कौन हूँ'... यह जानने से प्रेम आता है।
प्रेम ज्ञान है।
मोह अज्ञान है।
प्रेम निस्पेक्ष है... सबके, समस्त के प्रति है।
वह 'पर' निर्भर नहीं है। वह स्वयं में है।
वह 'किसी से' नहीं होता है। बस, होता है।
बुद्ध उसे करुणा कहते हैं।
महावीर उसे अहिंसा कहते हैं।
वह अकारण है, इसलिए नित्य है।
मोह अनित्य है।
कारण से होता है।
'पर' निर्भर है।
सापेक्ष है।
एक के प्रति है।
इसलिए, दुःख का मूल है।
प्रेम आता है, जब मोह जाता है।
मोह-मुक्ति प्रेम से होती है।
इससे प्रेम पा लेना, सब कुछ पा लेना है।
प्रेम मुक्ति है।

स्वनीश के प्रणाम
१४-२-१९६२



(प्रति : श्री श्रीरामचंद्र जी कोठारी, हिमोली, महाराष्ट्र)
- प्रेम की ज़ील में अनुग्रह के फूल-४

On the special occasion of Krishna Janmasthanmi



Krishna Smriti 1-22



Insight into Sannyas Names

-Osho

PREM PRANAVA

Prem means love and pranava means the primal sound. The mystic experience is that life consists of a subtle sound. The basic element, the basic constituent of existence is not matter, it is sound. It is not even electricity as physicists say; it is harmony. But the sound is not a word; it has no meaning, it is meaningless. It is pure music. That's why we become thrilled so much by music. It touches something primal in our energy.

The language of music is universal -- it simply goes deep into the heart. It knows no east, it knows no west, it

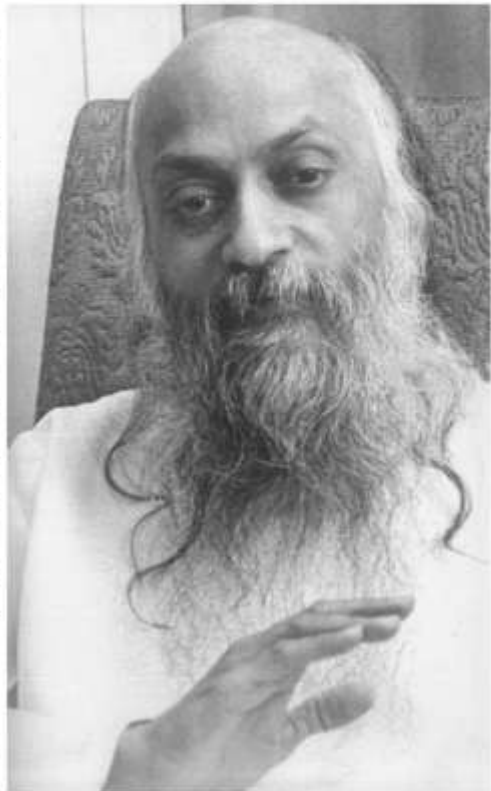
knows no white, no black. It recognizes no one as a Chinese, no one as an Indian, no one as a German. It simply goes deep into the heart; it is universal.

In fact this cuckoo (whose song is coming from somewhere in the garden) you can understand as much as another cuckoo can; it is universal. The wind passing through the trees creating a certain music is understood by everyone. If we don't understand then the problem is with us, with our noisy mind. Once our noise settles the messages are very loud and very clear.

The whole existence speaks. Even when it is silent it speaks... even silence carries a message. The whole existence is very vocal, and the ultimate source is pranava. This is the soundless sound, the sound of silence. That's what one has to seek and to become one with. And it is just there, close to your navel, just two inches below the navel.

So for you, my specific suggestion is that whenever you have time, just close your eyes, go into your belly. Settle just two inches below the navel, abide there, and you will attain to great joy.

The juices will start flowing, and you will feel tremendously satisfied for no reason at all; you will feel a wave of contentment



continuously arising. And whenever you feel that you are distracted, disturbed, tense, just close your eyes and go back into the belly; settle there.

The West thinks that the mind is in the head, but the east has been thinking for centuries that the mind is in the belly. When the western people came across this idea for the first time, they laughed; they thought this was foolish!

Buddhist scriptures say that man thinks through the belly. They mean something else. They don't mean the thinking that we know as thinking: they mean universal consciousness. By the mind they don't mean the brain. The brain is in the head but it is just an instrument in the hands of the mind, and the mind is in the belly.

Freudian analysis comes a little closer to it in the concept of the unconscious, but it is still far away.

Our existence is rooted in the belly. There we are one with the whole; it is from there that we live. So go there again and again. Whenever you feel distracted, just go -- and you will be able to. Close your eyes and just settle there.

That is your centre, and by and by you will start hearing a sound. I'm not saying that you have to create this sound -- it is uncreated -- but by and by, the more you settle in the belly, the more you will hear a sound which is very strange.

When it happens for the first time it is unbelievable; one feels 'Have I gone crazy or what?' It fills you from the toes to the head; ripples of it come. It surrounds you, it overwhelms you and it is really great! You forget the whole around you. You become that sound, you pulsate with it.

That sound is very close to the sound 'aum'... Not exactly 'aum' -- this is just an indication of it -- but very close, almost like it. That's why 'aum' became one of the most important sounds in India, mm?

There have existed three religions in India: Buddhism, Hinduism, Jainism. They differ in all their concepts -- their philosophies are absolutely contradictory to each other, they refute each other -- but about one thing they are in agreement, and that is the sound 'aum', because you cannot deny the existential.

That sound exists in the mohammedan 'amin' and the christian 'amen' -- that 'aum'. The sound is so subtle that you can hear it as 'amen', or 'amin' or 'aum', but it is the same sound; these are interpretations. That sound is called 'pranava'.

- The Further Shore, Ch #1

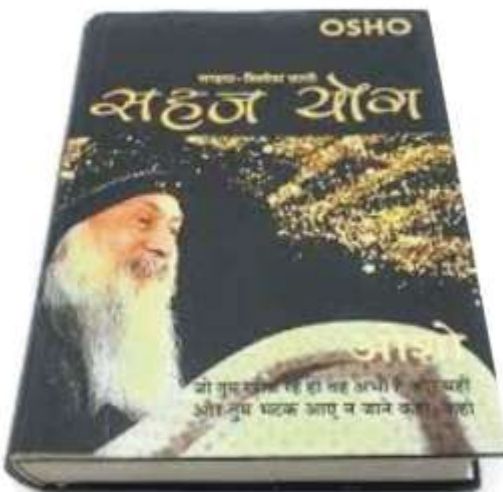
सहज योग

-ओशो

सिद्धों का एक महान संदेश, 'जागो', ओशो की वाणी द्वारा इन प्रवचनों में और भी अधिक मुखरित हुआ है। ओशो कहते हैं: 'जागो, मन जागरण की बेला! और जागरण की बेला हमेशा है। ऐसा कोई क्षण नहीं जब तुम जाग न सको। ऐसा कोई पल नहीं जब तुम पलक न खोल सको। आंख बंद किए हो यह तुम्हारा निर्णय है। आंख खोलना चाहो तो इसी क्षण क्रांति घट सकती है।'

विषय सूची

- प्रवचन 1 : जागो मन, जागरण की बेला
- प्रवचन 2 : ओंकार : मूल और गंतव्य
- प्रवचन 3 : देह गेह ईश्वर का
- प्रवचन 4 : सहज-योग और क्षण-बोध
- प्रवचन 5 : जगतएक रूपक
- प्रवचन 6 : सहज-योग का आधार : साक्षी
- प्रवचन 7 : जीवन के मूल प्रश्न
- प्रवचन 8 : जीवन का शीर्षक : प्रेम
- प्रवचन 9 : फागुन पाहुन बन आया घर
- प्रवचन 10 : तर्री खोल गाता चल माझी
- प्रवचन 11 : खोलो गृह के द्वार
- प्रवचन 12 : प्रेम : कितना मधुर, कितना मंदिर
- प्रवचन 13 : प्रार्थना अर्थात् संवेदना
- प्रवचन 14 : धरती बरसे अंबर भीजे
- प्रवचन 15 : प्रेम समर्पण स्वतंत्रता
- प्रवचन 16 : भोग में योग, योग में भोग
- प्रवचन 17 : माई, आज बजी शहनाई
- प्रवचन 18 : हो गया हृदय का मौन मुखर
- प्रवचन 19 : प्रेम प्रार्थना है
- प्रवचन 20 : हे कमल, पंक से उठो, उठो



कृष्ण को पाने का उपाय

—स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

प्रश्न— ऋषि शांडिल्य के मुताबिक अज्ञानी गोपियां भी भगवान कृष्ण के प्रति प्रेम के कारण ही मुक्त हो गयी थीं। भक्ति सूत्र में वे कहते हैं— अत एव तदभावाद्बल्लवीनाम्। तत्संबंध में ओशो की दृष्टि समझाने की कृपा करें।

अत एव तदभावाद्बल्लवीनाम्।

'ज्ञान-विज्ञान आदि के अभाव रहने पर भी ब्रज की गोपियां अनुराग के बल से ही मुक्ति के लाम करने में समर्थ हो गयी थीं।'

अत एव तदभावाद्बल्लवीनाम्। उस प्यारे को पाने का एक ही उपाय है; उसके भाव से आपूर हो जाओ, आकंठ भर जाओ। अत एव तदभावाद्बल्लवीनाम्। उसका भाव तुम्हें पूरा डूबा दे। तुम उसके भाव में ही पूरे लीन हो जाओ। उस प्यारे का पाने को एक ही उपाय है, ज्ञान नहीं, तप नहीं, भाव। शांडिल्य कहते हैं, गोपियां न तो ज्ञानी थीं, न तपस्वी थीं, न उन्होंने योग साधा, न कुछ साधनाएं कीं, न हिमालय की गुफाओं में गर्वीं, न त्याग किया संसार का। सीधी-साधी स्त्रियां थीं, मगर भाव से भर गयीं। उसके भाव में डूब गयीं।

तुमने चित्र देखा होगा - गोपियां नाच रही हैं, कृष्ण नाच रहे हैं, और हर गोपी के साथ एक कृष्ण नाच रहा; कृष्ण उतने ही हो गए जितनी गोपियां हैं। जितने शून्य होंगे इस जगत में, उतनी ही भगवत्ताएं हो जाती हैं। महावीर भी भगवान हैं, इससे कुछ बुद्ध के भगवान होने में कमी नहीं पड़ती। मगर हम बड़े कंजूस हैं। हम सोचते हैं इसमें झंझट है। इसलिए ईसाई कहता है - सिर्फ क्राइस्ट भगवान हैं, कृष्ण नहीं। और हिंदू कहता है - कृष्ण भगवान हैं, महावीर नहीं। और जैन कहता है - महावीर भगवान हैं और बुद्ध नहीं। क्योंकि सबको ऐसा लगता है कि बहुत भगवान हो गए तो अपने भगवान की भगवत्ता कुछ कम हो जाएगी। कंजूसों का हिसाब है। वह सोचते हैं - इतने भगवान हो गए तो स्वभावतः भगवत्ता डायल्यूट हो जाएगी। उसकी मात्रा कम-कम हो जाएगी। बूंद-बूंद रह गयी। अपने ही भगवान सिर्फ भगवान होते, तो पूरा सागर होते। अब इतने हो गए, तो बस बह रहे हैं छोटे-मोटे झरने की भांति, फिर सागर कहाँ। इस डर के कारण सारे धर्म एक मूढ़तापूर्ण बात में उलझ गए हैं कि जो हमारा है, बस वही सच, बाकी सब झूठ।

तुमने कृष्ण को देखा, सब गोपियों के साथ नाचते? वह बड़ा प्रतीक चित्र है। वह यह कह रहा है कि जितनी घेतनाएं हैं इस जगत में, उतनी भगवत्ताएं हो सकती हैं। भगवान अनंत है, भगवत्ताएं अनंत हो सकती हैं। तुमने उपनिषद का वचन सुना? उस पूर्ण से पूर्ण को भी निकाल लो तो भी पीछे पूर्ण ही शेष रह जाता है। बुद्ध के भगवान होने से भगवान कुछ कम नहीं हो गया, कि अब जो भगवान होगा उसको कुछ कम मात्रा में भगवत्ता मिलेगी। भगवान उतना का उतना ही है। सारी कला तुम्हारे शून्य होने की है। तुम शून्य हुए कि तुम पूर्ण से भरें। फिर जितने शून्य होंगे उतने पूर्ण से भर जाएंगे। यह सारा जगत भगवान से सराबोर है। इसमें कोई और जगह ही नहीं है। भगवान ही भगवान भरा हुआ है। और जब तुम्हें पता नहीं है, तब भी भगवान तुम्हारे भीतर मौजूद है, सिर्फ पता नहीं है। सारी बात इतनी है कि तुम्हें लौटकर दिखायी पड़ जाए।

न तो तपश्चर्या की जरूरत है, न किसी गोरखधर्म में पड़ने की। तदभावाद्बल्लवीनाम्। उस प्यारे को पाना है, बस एक बात कर लो - अपने को मिटा दो, उसके भाव को निमंत्रण दे दो।



निगेटिव विचार से छुटकारा और प्रभु मार्ग

-स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती



माधोपुर में किसी मित्र ने मुझसे पूछा था कि मन में बहुत निगेटिव विचार चलते हैं, उससे छुटकारा पाना चाहता हूँ क्या करूँ?

ये मन तुम्हारा है कि किसी और का? ये निगेटिव विचार चलते जाते हैं अपने आप किसी का कोई वश नहीं, तुम नहीं चाहते हो कि वे विचार आएँ और वे फिर भी आते हैं। क्या तुम होश में हो? जो तुम सोचना नहीं चाहते हो वही सोचते हो, जो तुम करना नहीं चाहते हो वही तुम करते हो, तुम

होश-हवास में हो कि किसी प्रकार के नशे में हो? पुनर्विचार करना, अपने आपको झगझोरना और तुम पाओगे कि तुम बिल्कुल मूर्खित ढंग से जी रहे हो, एक बेहोशी घेरे हुए है। वही सब हो रहा है जिंदगी में जो नहीं होना चाहिए और जो होना चाहिए वो हो ही नहीं रहा है। इसका मतलब हम ठीक-ठीक होश-हवास में नहीं है।

एक शराबी आदमी दारु पीकर सड़क पर चल रहा है वो चाहता है कि ठीक बायीं ओर चले और ट्रैफिक नियम का पालन करे लेकिन थोड़ी ही देर में फिर वह वीच सड़क में आ जाता है, फिर दायीं तरफ पहुँच जाता है। वो ऐसा चाहता नहीं लेकिन उसके चाहने से कुछ होता ही नहीं। चाहता तो बहुत अच्छी बात है कि बायीं तरफ चलूँ लेकिन चाहने से क्या होगा। वह शराब के नशे में, डावाँडोल है, उसको बाएँ-दायें का होश है लेकिन फिर भी वीच सड़क पर आ जाता है। ट्रैफिक वाले हार्न बजा रहे हैं लेकिन उसको समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करे। चाहता तो वह सबकुछ अच्छा ही अच्छा है, वह नहीं चाहता कि गिरे लेकिन वह बार-बार गिरता है। उससे पूछे कि तुम नाली में कैसे गिर गए, क्या तुम गिरना चाहते थे? वह कहेगा मैं नहीं चाहता, मैं तो चाहता हूँ कि मुझे कभी चोट-स्वरोच न लगे लेकिन उसके चाहने से क्या होता है। वो तो नशे में, वो तो गिरे ही गिरेगा और कहीं न कहीं चोट खाएगा ही खाएगा।

प्यारे मित्रो, अपने जीवन में जरा विचार करो। हम चाहते हैं शांत होना, हम चाहते हैं प्रसन्न होना, हम चाहते हैं प्रेमपूर्वक जीना, हम चाहते हैं हमारे घर में खुशहाली का माहौल हो, हम चाहते हैं कि पिता-पुत्र का संबंध बड़ा अच्छा हो, हम चाहते हैं कि

पति-पत्नी के बीच में बड़ी मधुरता हो, हम चाहते हैं कि पड़ोसी के संग हमारा अच्छा व्यवहार हो, हम चाहते हैं कि आफिस में सबसे मिलजुलकर काम करें और होता बिल्कुल उल्टा है। क्या हम होश में हैं? हां, वो शराबी भी डगमगाता हुआ आखिर अपने घर पहुंच ही जाता है, वो भी कहेगा कि हां, मैं बिल्कुल होश में हूं, खूब सम्हल-सम्हलकर चलता हूं। सच पूछे तो शराबी जितना सम्हलकर कोई नहीं चलता। बेचारा बहुत सम्हलकर चलता है लेकिन अटक-अटक जाता है किन्तु अंततः वह घर तो पहुंच ही जाता है गिरते-पड़ते हुए। कहीं दीवाल से टकरा जाता है, कहीं कुछ, कहीं कुछ लेकिन घर तो पहुंच ही जाता है और वह भी कहता है कि हम तो होश-हवास में हैं, देखो घर आ गया।

बस, हमारा होश भी ऐसे ही कामचलाऊ है। हम भी दुकान चला ले रहे हैं, फैंक्ट्री में काम कर ले रहे हैं, परिवार में अपनी भूमिका निभा दे रहे हैं, कामचलाऊ। यद्यपि कुछ भी अच्छा नहीं हो रहा है लेकिन काम तो चल ही जा रहा है। हम भी किसी गहरी मूर्ख में हैं। अगर हम अपने भीतर के उस अतिसूक्ष्म परमात्मा को, आत्मा को खोजना चाहें तो एक चीज की जरूरत है, ये जो कामचलाऊ होश है यह पर्याप्त नहीं है। परमात्मा की खोज के लिए यह पर्याप्त नहीं है। ठीक है आफिस में काम चल जाता है, तुम फाइल खोलकर देख लेते हो मगर कामचलाऊ, इससे भीतर की अंतरात्मा का दर्शन नहीं होगा। उस सूक्ष्म तत्व को जानने के लिए अत्यंत सूक्ष्म होश चाहिए, पैनी दृष्टि चाहिए। एक आदमी को कम दिखता है, पास का भी नहीं दिखता और दूर का भी नहीं दिखता लेकिन उसको भी कुछ तो दिखता ही है कामचलाऊ और वह भी घर में घूम लेता है, काम तो उसका चल ही रहा है। लेकिन यह जो कामचलाऊ है इससे तो सूक्ष्म बातें नहीं हो सकेंगी। अगर उसको हम कहें कि तुम किताब पढ़ लो तो वह किताब नहीं पढ़ पाएगा। हां, मोटी-मोटी चीज उसको दिखेंगी, किताब उसको दिखेगी लेकिन किताब में क्या लिखा है वह नहीं पढ़ सकता। लिफाफा दिख रहा है पक्का आया है, पहचान



गया कि लेटर है इतनी नजर है उसके पास लेकिन भीतर पत्र को खोलकर उसमें लिखा क्या है ये वह नहीं पढ़ पाएगा। कटेनर को जान सकता है लेकिन कटेन्स को नहीं पहचान सकता।

ऐसा ही हमारा जो कामचलाऊ होश है उसमें हमारा जो कटेनर है शरीर

उससे बड़ा कटेनर है ये मन, डब्बे के भीतर डब्बा। पहले एक डब्बा हमारा शरीर है, उसके भीतर एक डब्बा मन है, उसके और भीतर हमारा हृदय है, उसके भीतर अत्यंत सूक्ष्म आत्मा और उसके भीतर परमात्मा। हमारा जो कामचलाऊ होश है इससे हम बाहर के कटेनर को तो पहचान लेते हैं, लिफाफा को हमने देख लिया लेकिन भीतर पत्र में क्या लिखा है वो हमारी पकड़ में नहीं आती। उसके लिए जरा पैनी दृष्टि चाहिए। ये उथला-उथला होश वहां के लिए पर्याप्त नहीं है, वहां ध्यान साधने की जरूरत है। और

ध्यान साधने का जो सुगमतम उपाय है, सब पूछे तो एकमात्र उपाय है।

महावीर ने कहा है कि सारे धर्मों का सार ध्यान है। सारे धर्मों का, ऐसा नहीं कहा कि सिर्फ जैन धर्म का सार ध्यान है। कहा सारे धर्मों का सार ध्यान है। ध्यान यानि होश, ध्यान यानि जागरूकता, मेडिटेशन मीन्स मोर एण्ड मोर अटेंशन, ज्यादा से ज्यादा जागरूकता। तो अपने जीवन में भी व्यस्तताएं हैं वहां से शुरू करें। कुछ क्रियाएं कर रहे हैं शरीर के लिए, चल रहे हैं, फिर रहे हैं, भोजन कर रहे हैं, कुछ काम कर रहे हैं, टहल रहे हैं होश बना हुआ है। मन की क्रियाएं हैं कुछ पढ़ रहे हैं, बातचीत कर रहे, आफिस में काम कर रहे, हिसाब-किताब कर रहे और होशपूर्वक मंथन चल रहा है। लगातार आपको एहसास बना रहे कि मैं हूँ, ये फाइल है, ये हिसाब-किताब लिख रहा हूँ और मैं हूँ। हर चीज में मैं हूँ जोड़ दो। इसी को मैं कहता हूँ योग। योग यानि जोड़। क्या चीज जोड़ना है? इस होश को जोड़ना कि मैं हूँ।

सड़क पर चल रहे हैं तो याद रखें कि मैं हूँ। कार ड्राइव कर रहे हैं तो सामने ट्रैफिक पर ध्यान, कार चलाने का होश और मैं हूँ। अपने आपको न भूल जाएं, हर छोटी-छोटी चीज में जोड़ दें मैं हूँ। ऐसा कहने की जरूरत नहीं है कि मैं हूँ, बस यह ख्याल बना रहे, यह स्मरण बना रहे कि मैं हूँ। मैं बोल रहा हूँ तो मैं हूँ, मैं सुन रहा हूँ तो मैं हूँ, अभी आप मुझे सुन रहे हैं तो मेरी बातों में खो मत जाना, स्मरण रखना स्वयं के होने का। ये भीतर मौन है जो सुन रहा। ठीक है बाहर मेरी आवाज आ रही है और आप सुन रहे हैं लेकिन याद बनी रहे सुनने वाले की। बोलने वाले पर ही मत खो जाना तब आपने इस व्यस्तता में से भी सूत्र पकड़ लिया चैतन्यता का। और फिर चौबीस घंटे में से आधा-एक घंटा निकाल लेना बिल्कुल अव्यस्त होकर। अब न कुछ देखना, न कुछ सुनना, न कुछ सोचना, न कुछ करना, न कुछ बोलना, सिर्फ होना। अंग्रेजी के शब्दों में इस बात को कहें, घटना - हैपनिंग, करना - डूइंग, सोचना - थिंकिंग, भावना - फीलिंग, होना - बीइंग।

हैपनिंग, डूइंग थिंकिंग, फीलिंग ये चार हमारी व्यस्तताएं हैं। इस व्यस्त जीवन में होश कैसे घटित होगा? अपनी बीइंग, अपने होने में दुबकी, अपनी आत्मा में दुबकी लगाने से घटित होगा। और आत्मा का गुण क्या है, जागरण, होश, ध्यान। वही सूत्र है, वही है कुंजी उस खजाने को खोजने की। तो शुरूआत कहां से करेंगे, इन चार व्यस्तताओं से ही शुरू करें क्योंकि हमारा सारा समय उसी में जाएगा।

अंत में निवेदन है कि चौबीस घंटे में से कम से कम एक घंटा निकाल लें अव्यस्त होने के लिए, कुछ भी न करें। जापान के झेन फकीर कहते हैं सिटिंग साइलेंटली डूइंग नथिंग द सिप्रिंग्स कम्स एण्ड द ग्रास ग्रोस बाई इट सेल्फ। कुछ न करते हुए बस यूँ ही बैठे-बैठे आती है प्रभु बसंत की और घास अपने आप ऊगती है, फूल अपने आप खिलते हैं, यह पूरी जीवन की बगिया महक उठती है। तो व्यस्तताओं से शुरू करें जागरण की साधना और अंततः अपने होने के प्रति जागें पूर्ण अव्यस्तता में, अनअवयूपाइड स्टेट में भी। यही है प्रभु की खोज का मार्ग। अव्यस्त सजगता ही ध्यान का शिखर है।

स्वस्थ रहें, मरत रहें

—स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

ज्यादा शक्कर खाने से मधुमेह होता है यह धारणा कितनी सही है

Quora

इस धारणा में मुश्किल से 5: सच्चाई है।

यदि माता पिता दोनों को मधुमेह है तो उनकी संतान में बीमारी होने की संभावना 80: रहती है। यदि माता पिता में से किसी एक को मधुमेह है तो बच्चों में 50: संभावना है। चाहे वे लोग कम शक्कर खाएं अथवा ज्यादा। मुख्य रूप से अनुवांशिक बीमारी है।

करीब 5: मरीज ऐसे हैं जिन्हें जेनेटिक रोग नहीं है। किंतु अधिक भोजन लेने से, वजन बढ़ जाने से, अधिक शक्कर (या कोई भी कार्बोहाइड्रेट) का सेवन करने से उन्हें मधुमेह हो गया है।

क्या डायबिटीज से अचानक मौत हो सकती है

Quora

प्रत्यक्ष रूप में डायबिटीज से अचानक मृत्यु नहीं होती। इसलिए इस बीमारी को "साइलेंट किलर" कहा जाता है। लेकिन मधुमेह से उत्पन्न हुई दूसरी बीमारियां जानलेवा साबित होती हैं, विशेषकर— हाइपरटेंशन, इस्किमिक हार्ट डिजीज, ब्रेन हेमरेज या किडनी फेलियर।

अपने दिन प्रतिदिन की जीवनचर्या में और अपने खानपान में क्या सावधानियां बरती जाएं जिससे किडनी फेल्योर से बचा जा सके

Quora

मधुमेह एवं उच्च रक्तचाप का नियंत्रण रखना जरूरी है। ऊंचाई के अनुसार सामान्य वजन हो। कार्बोहाइड्रेट तथा नमक की मात्रा कम हो।

पैसा, समय, आहार और स्वास्थ्य में क्या नाता है

Quora

आपने अंग्रेजी की एक कहावत सुनी होगी— वी आर, वॉट वी ईट। यानि हम क्या हैं, ये इस पर निर्भर करता है कि हम क्या खाते हैं। यह सच भी है। सोचा जाये तो दिन में 24 घंटों में से सोने के आठ घंटे निकाल दिए जाएं तो 16घंटों में से करीब तीन घंटे हम खाने की मेज पर या फिर भोजन के बारे में सोचने में बिता देते हैं। अगर भोजन की तैयारी का समय भी जोड़ दिया जाये तो प्रतिदिन हमारी जिंदगी के सात- आठ घंटे भोजन के आस-पास केन्द्रित है।

जब आप खुश होते हैं तो उत्सव मनाने की इच्छा होती है। भारतीय संसृति में हर खुशी की पहली अभिव्यक्ति भोजन ही है। भोजन उस उत्सव का अभिन्न अंग होता है क्योंकि इसके साथ जीवन-शक्ति जुड़ी है। आप अपने मित्रों से मिलना चाहते हैं, आप उनको डिनर पर या लंच पर बुलाते हैं। तो ये बात तो पक्की है कि भोजन हमारे जीवन का बहुत ही महत्वपूर्ण भाग है फिर भी हम उसके बारे में बिल्कुल नहीं जानते। अगर हर व्यक्ति यह जानता कि सही भोजन क्या है तो मोटापा या अन्य कई बीमारियां, जो आजकल बिल्कुल आम हैं, होती ही नहीं। वस्तुतः अगर हम सम्यक आहार अपनी जीवन शैली का अंग बना लें तो हम स्वस्थ, सुन्दर और उर्जवान रहेंगे।

देखा जाए तो जीभ के दो कार्य होते हैं— स्वाद लेना और बोलना। यदि इन दोनों कार्यों को वश में कर लिया जाए, तो व्यक्ति हमेशा सुखी रहेगा।

हालांकि ये ओवर-सिमिलफिकेशन है लेकिन जीवन के तीन स्तम्भ हैं— पैसा, समय और स्वास्थ्य। अगर आप स्वस्थ हैं और आपके पास समय भी है तो आप कुछ काम करके पैसे भी कमा सकते हैं। अगर आप धनी हैं और स्वस्थ हैं तो समय निकाल कर आप जीवन का आनंद ले सकते हैं। लेकिन अगर आपके पास पैसा है और समय है पर स्वास्थ्य नहीं है, तो जीवन बोज़ बन के रह जायेगा।

आपके सवाल- स्वामी जी के जवाब

—स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

क्या आपको पता है मृत्यु से लोग क्यों डरते हैं

Quora

मृत्यु के बारे में तो हमें पता ही नहीं है कि वह एक अच्छी अथवा बुरी अनुभूति होगी। फिर हम डरते किस बात से हैं ?

हमारी कामनाओं को पूरा करने का अवसर शेष नहीं बचेगा, यह बात भयभीत करती है। इच्छाएं अधूरी रह जाएंगी, वासना पूर्ति का मौका नहीं मिलेगा।

"भविष्य का खत्म होना" हमें डरता है, ना कि मौत का आना।

इसलिए जो व्यक्ति कामनाओं के पार उठ गया, वर्तमान क्षण में आनंदित हो गया, वह मृत्यु से नहीं डरता। क्योंकि अब मौत भी उससे कुछ छिन नहीं सकती।

मन, बुद्धि और आत्मा का आपस में क्या सम्बन्ध है

विचारों, स्मृतियों, व कल्पनाओं का संग्रह मन है। मन का ऊपरी 12: हिस्सा चेतन मन है, जो शिक्षा और संस्कार से निर्मित हुआ है। यह तर्क युक्त बुद्धि से संबंध है। मन का गहरा 88: हिस्सा अवचेतन कहलाता है। वह तार्किक बुद्धि या विवेक से संपन्न नहीं है। यह पशु-पक्षियों के समान है। हमारी बुद्धि ही हमें वास्तव में मनुष्य बनाती है।

जैसे चेतन मन के नीचे छिपा हुआ अवचेतन मन है, वैसे ही चेतन मन के ऊपर फैला हुआ अति-चैतन्य या महाचेतन आकाश है। इसी को आत्मा कहा जाता है।

बुद्धि को यदि कुएं के पानी की उपमा दी जाए, तो अवचेतन मन को भूमिगत जल भंडार कह सकते हैं। और आत्मा को विराट वायुमंडल में मौजूद नदी के समान समझा जा सकता है।

है तीनों ही पानी - एच टू ओ।

मूल प्रति एक जैसी है। किंतु उपयोगिता के हिसाब से अलग अलग हैं। गुण सामान किंतु परिमाण भिन्न-भिन्न हैं।

क्या परमात्मा मिल सकता है

Quora

यदि आप ईश्वर की व्यक्तिवाची धारणा मानते हैं तो फिर वह कभी नहीं मिल सकता।

अगर आप "आत्मा का परम रूप "परमात्मा" मानते हैं तो फिर अपने भीतर मिल सकता है।

खुद के भीतर खुदा है।

उसे जानने की विधि का नाम ध्यान या मेडिटेशन है। शांत और सजग होने पर, स्वयं के भीतर आकारमय चैतन्य की अनुभूति होती है। परमानंद घटित होता है।

जिसने आत्मा में परमात्मा को पहचान लिया, वह यह भी जान जाता है कि सब में वही मौजूद है। तब उसका जीवन एक अद्भुत प्रेम से ओतप्रोत हो जाता है।

स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती जी के वीडियो



आधुनिक विज्ञान की भाषा में सात शरीरों की व्याख्या



दीक्षा का क्या महत्व है? दीक्षा का रहस्य व विधि ?



जीते जी मरने का अनुभव किस विधि से होता है



मैं छोटी छोटी बातों से परेशान हो जाता हूँ क्या करूँ

Shorts:-



गलत दिखने वाला गलत हो जखरी नहीं



सम्मोहन ध्यान में समानता व असमानता

Osho Fragrance Spl Video -



ओशो फ्रेग्रेस की यात्रा २०१९ से अब तक हूँ

छोटी-छोटी घटनाएं : बड़ी-बड़ी प्रेरणाएं

-मा अमृत प्रिया



प्रेम और सौंदर्य

सद्गुरु ओशो कहते हैं कि प्रेमपात्र दर्पण बन जाता है, और पहली बार हम उसमें झांक कर अपने सौंदर्य के प्रति सजग होते हैं। सच्चे प्रेम में खुद पर ध्यान जाता है। इस प्रकार प्रेम भी ध्यान का परोक्ष मार्ग बन जाता है। यह घटना दोनों तरफ से घटित होती है। नरगिस की आधी कथा तो संभवतः आपने पहले भी सुनी होगी। आज पूरी कथा को हृदयंगम कीजिए।

नारसिसस (नरगिस) नामक एक युवक था जिसने किसी झील के किनारे बैठकर पानी में अपना अक्स देखा। अपने अप्रतिम रूप को देखकर वह खुद पर इतना मोहित हो गया कि सुध-बुध खो बैठा और झील में गिरकर डूब गया। एक दूसरी कहानी ऐसा भी कहती है कि वह खुद को देखकर सब कुछ भूल गया और बेचारे ने वहीं बैठे-बैठे भ्रूख-प्यास से दम तोड़ दिया।

कहते हैं कि जिस जगह वो गिरा अथवा बैठा-बैठा मर गया था वहां एक सुंदर फूल उगा, जिसे हम नरगिस के नाम से जानते हैं।

लेकिन उस किताब में नारसिसस की इस कहानी के अलावा और कुछ भी बयां किया गया था। उसमें लिखा था कि नारसिसस की मौत के बाद उस वन की देवियां उस झील तक आईं, और उन्होंने देखा कि झील का मीठा पानी खारा हो चुका था।

'तुम क्यों ये रही हो?', वनदेवियों ने झील से पूछा।

'ये आंसू नारसिसस के लिए हैं, झील ने कहा।

'हम जानते हैं कि नारसिसस के गुजर जाने का तुम्हें सबसे ज्यादा दुख है' उन्होंने कहा, 'क्योंकि हमने उसे हमेशा दूर से ही देखा जबकि तुमने उसकी सुंदरता को करीब से जी भर के निहार।

'लेकिन... क्या वो बहुत सुंदर था?', डील ने पूछा।

'तुमसे बेहतर इस बात को कौन जान सकता है?', वनदेवियों ने अवरज से कहा, 'तुम्हारे किनारे पर बैठकर ही तो वह पानी में अपनी छवि को निहारता रहता था!'

यह सुनकर डील कुछ पल को चुप रही, फिर वह बोली:- 'मैं नारसिसस के लिए रोती रही लेकिन मुझे यह पता न था कि वह सुंदर था। मेरे रोने की वजह कुछ और थी। जब वह मेरे किनारे पर बैठकर मुझे देखता था तो मुझे उसकी आंखों में अपनी खूबसूरती नजर आती थी।'

प्रेम की नजर से देखने पर सुंदरता उत्पन्न होती है। एक बड़ी प्यारी बाउल फकीर की कथा सद्गुरु ओशो ने अपने एक पत्र में लिखी है। सुनिये-

फूलों की बगिया में सुनार

प्रेम क्या है? कल कोई पूछ रहा था।

मैंने कहा 'प्रेम जो कुछ भी हो, उसे शब्दों में कहने का कोई उपाय नहीं है क्योंकि वह कोई विचार नहीं है। प्रेम तो अनुभूति है। उसमें डूबा जा सकता है पर उसे जाना नहीं जा सकता। प्रेम पर विचार मत करो। विचार को छोड़ो और फिर जगत को देखो। उस शांति में जो अनुभव में आया वही प्रेम है।'

और फिर मैंने एक कहानी भी कही। किसी बाउल फकीर से एक पंडित ने पूछा 'क्या आपको शास्त्रों में वर्गीकृत किये गए प्रेम के विभिन्न रूपों का ज्ञान है?'

वह फकीर बोला 'मुझ जैसा अज्ञानी भला शास्त्रों की बातें क्या जाने!'

यह सुनकर पंडित ने शास्त्रों में वर्गीकृत किये गए प्रेम के विभिन्न रूपों की विस्तार से चर्चा की और फिर इस संबंध में बाउल फकीर का मतव्य जानना चाहा।

बाउल फकीर खूब हंसा और बोला 'आपकी बातें सुनते समय मुझे यह लग रहा था जैसे कोई सुनार फूलों की बगिया में घुस आया हो और फूलों के सौंदर्य को स्वर्ण को परखनेवाले पत्थर पर घिस-घिस कर जांच रहा हो।'

सौंदर्य को सिद्ध करना असंभव

यह रूसी कहानी किसी गांव में रहनेवाले एक युवक के बारे में है जिसे सभी मूर्ख कहते थे। बचपन से ही वह सबसे यही सुनता आ रहा था कि वह मूर्ख है। उसके माता-पिता, रिश्तेदार, पड़ोसी- सभी उसे मूर्ख कहते थे और वह इस बात पर यकीन करने लगा कि जब इतने बड़े-बड़े लोग उसे मूर्ख कहते हैं तो वह यकीनन मूर्ख ही होगा। किशोरवस्था को पार कर वह जवान हो गया और उसे लगने लगा कि वह पूरी जिंदगी मूर्ख ही बना रहेगा। इस अवस्था से बाहर निकलने के बहुत प्रयास किए लेकिन उसने जो भी काम किया उसे लोगों ने मूर्खतापूर्ण ही कहा।

यह मानव स्वभाव है। कोई कभी पागलपन से उबरकर सामान्य हो जाता है लेकिन कोई उसे सामान्य मानने के लिए तैयार नहीं होता। वह जो कुछ भी करता है उसमें लोग पागलपन के लक्षण खोजने लगते हैं। लोगों की आशंकाएं उस व्यक्ति को संकोची बना देती हैं और उसके प्रति लोगों के संदेह गहरे होते जाते हैं। यह एक कुत्क है। रूसी गांव में रहनेवाले उस युवक ने भी मूर्ख की छवि से निकलने के भरसक प्रयास किए लेकिन उसके प्रति लोगों के रवैये में बदलाव नहीं आया। वे उसे पहले की भांति मूर्ख कहते रहे।

कोई संत वहां से गुजरा। युवक रात के एकांत में संत के पास गया और उनसे बोला, 'मैं इस छवि में बंधकर रह गया हूं। मैं सामान्य व्यक्ति की तरह रहना चाहता हूं लेकिन वे मुझे मुक्त नहीं करना चाहते। उन्होंने मेरी स्वीकार्यता के सारे मार्ग और द्वार बंद कर दिए हैं कि मैं कहीं उनसे बाहर न आ जाऊं। मैं उनकी ही भांति सब कुछ करता हूं फिर भी मूर्ख कहलाता हूं। मैं क्या करूं?'

संत ने कहा, 'तुम एक काम करो। जब कभी कोई तुमसे कहे, 'देखो, कितना सुंदर सूर्यास्त है,' तुम कहो, 'तुम मूर्ख हो, सिद्ध करो कि इसमें सुंदर क्या है? मुझे तो इसमें कोई सौंदर्य नहीं दीखता, तुम सिद्ध करो कि यह सुंदर है।' यदि कोई कहे, 'यह गुलाब का फूल बहुत सुंदर है,' तो उसे आड़े हाथों लेकर कहो, 'इसे साबित करो! किस आधार पर तुम्हें यह साधारण सा फूल सुंदर लग रहा है? यहां गुलाब के लाखों फूल हैं। लाखों-करोड़ों फूल खिल चुके हैं और लाखों-करोड़ों फूल खिलते रहेंगे, फिर गुलाब के इस फूल में क्या खास बात है? तुम किन विशेषताओं और तर्कों के आधार पर यह सिद्ध कर सकते हो कि यह गुलाब का फूल सुंदर है?'

'जब कोई तुमसे कहे, 'लीओ टॉल्स्टॉय की यह कहानी बहुत सुंदर है,' तो उसे पकड़कर उससे पूछो, 'सिद्ध करो कि यह कहानी सुंदर है, इसमें सुंदर क्या है? यह सिर्फ एक साधारण कहानी है और ऐसी हजारों-लाखों कहानियां किताबों में बंद हैं, इसमें भी वही त्रिकोण है जो हर कहानी में होता है- दो आदमी और एक औरत या एक औरत और दो आदमी, यही त्रिकोण हमेशा होता है। सभी प्रेम कहानियों में यह त्रिकोण होता है। इसमें नई बात क्या है?'



युवक ने कहा, 'ठीक है। मैं ऐसा ही करूंगा।'

संत ने कहा, 'हां, ऐसा करने का कोई मौका मत छोड़ना, क्योंकि कोई भी इसे सिद्ध नहीं कर पाएगा, क्योंकि इन्हें सिद्ध नहीं किया जा सकता। और जब वे इसे सिद्ध नहीं कर पाएंगे तो वे अपनी मूर्खता और अज्ञान को पहचान लेंगे और तुम्हें मूर्ख कहना बंद कर देंगे। अगली बार जब मैं वापस आऊं, तब तुम मुझे यहां घटी सारी बातें बताना।'

कुछ दिनों बाद संत का उस गांव में दोबारा आना हुआ, और इससे पहले कि वह युवक से मिलते, गांव के लोगों ने उनसे कहा, 'यह तो चमत्कार ही हो गया। हमारे गांव का सबसे मूर्ख युवक एकाएक सबसे बुद्धिमान व्यक्ति बन गया है। हम आपको उससे मिलवाना चाहते हैं।'

संत को पता था कि वे किस 'बुद्धिमान व्यक्ति' की बात कर रहे हैं। उन्होंने कहा, 'हां, मैं भी उससे मिलना चाहूंगा, बल्कि मैं उससे मिलना ही चाहता था।'

वे संत को मूर्ख युवक के पास लेकर गए और मूर्ख ने उनसे कहा, 'आप चमत्कारी पुरुष हैं, दिव्य हैं। आपके उपाय ने काम कर दिया! आपके बताए अनुसार मैंने सभी को मूर्ख और अज्ञानी कहना शुरू कर दिया। कोई प्रेम की बात करता था, कोई सौंदर्य की, कला की, साहित्य की, शिल्प की बात करता था और मेरा एक ही व्यक्तित्व होता था- 'सिद्ध करो!' वे सिद्ध नहीं कर पाते थे और मूर्खत्व अनुभव करने लगते थे।'

'यह कितना अजीब है। मैं सोच ही नहीं सकता था कि इसमें कोई इतनी गहरी बात होगी। मैं केवल इतना ही चाहता था कि वे मुझे मूर्ख समझना बंद कर दें। यह अद्भुत बात है कि अब मुझे कोई मूर्ख नहीं कहता बल्कि सबसे बुद्धिमान व्यक्ति कहता है, लेकिन मैं जानता हूँ कि वही हूँ जो मैं था- और इस तथ्य को आप भी जानते हैं।'

संत ने कहा, 'इस रहस्य की चर्चा किसी से न करना। इसे अपने तक ही रखना। तुम्हें लगता है कि मैं कोई संत-महात्मा हूँ? हां, यही रहस्य है लेकिन मैं भी उसी प्रकार से संत बना हूँ जिस तरह से तुम बुद्धिमान बन गए हो।'

सत्य, शुभ, सौंदर्य, परमात्मा के समस्त आयाम रहस्य हैं। अनुभूति के रूप में उन्हें जानना संभव है, किंतु बौद्धिक ज्ञान के रूप में जानना संभव नहीं है। वे तर्क एवं विचार के हिस्सा नहीं बन सकते। जीवन के समस्त महत्वपूर्ण अनुभव हृदयंगम किए जाते हैं, चिंतन-मनन से उपलब्ध नहीं होते। आध्यात्मिक साधना का अर्थ है अपनी इंद्रियों की संवेदनशीलता बढ़ाना।

मा अमृत प्रिया जी की म्यूजिक एल्बम



Ma Amrit Priya's Music album

Osho Naman Tumhe Contents

1.Ishq Me Osho Ke

2.Osho Naman Tumhe

3.Mohe Osho Ne Alakh

4.HumkoJamale Osho ne



पुष्पांजलि



पठनीय एवं



श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

अगस्त 2022

75

आज़ादी का
अमृत महोत्सव



आनंद की कसौटी

-ओशो

दो फकीर एक संध्या अपने झोपड़े पर पहुंचे। वे चार महीने से बाहर थे और अब वर्षा आ गई थी तो अपने झोपड़े पर वापस लौटे थे। लेकिन झोपड़े के करीब आकर, जो आगे युवा फकीर था, वह एकदम क्रोध से भर गया और दुखी हो गया। वर्षा की हवाओं ने आधे झोपड़े को उड़ा दिया था, आधा ही झोपड़ा बचा था। वे चार महीने भटक कर आए थे इस आशा में कि वर्षा में अपने झोपड़े में विश्राम कर सकेंगे, पानी से बच सकेंगे, यह तो मुश्किल हो गई। झोपड़ा आधा टूटा हुआ पड़ा था, आधा छप्पर उड़ा हुआ था।

उस युवा संन्यासी ने लौट कर अपने बड़े साथी को कहा कि यह तो हद हो गई। इन्हीं बातों से तो भगवान पर शक आ जाता है, संदेह हो जाता है। महल खड़े हैं पापियों के नगर में, उनका कुछ बाल बांका नहीं हुआ। हम गरीबों की झोपड़ी, जो दिन-रात उसी की प्रार्थना में समय बिताते हैं, वह आधी छप्पर टूट गई। इसीलिए मुझे शक हो जाता है कि भगवान है भी! यह प्रार्थना है भी! क्या हम सब गलती में पड़े हैं, हम पागलपन में पड़े हैं? हो सकता है पाप ही असली सचाई हो, क्योंकि पाप के महल खड़े रह जाते हैं और प्रार्थना करने वालों के झोपड़े उड़ जाते हैं।

वह क्रोध से भर गया और निंदा से भर गया और उसे अपनी सारी प्रार्थनाएं व्यर्थ मालूम पड़ी। लेकिन वह जो उसका साथी था, वह हाथ आकाश की तरफ जोड़ कर खड़ा हो गया और उसकी आंखों से आनंद के आंसू बहने लगे। वह युवक तो हैरान हुआ! उसने कहा क्या करते हैं आप? उस बड़े ने कहा मैं परमात्मा को धन्यवाद देता हूँ क्योंकि जरूर ही... आधियों का क्या भरोसा था, पूरा झोपड़ा भी उड़ा कर ले जा सकती थीं। भगवान ने ही बीच में कोई बाधा दी होगी, इसलिए आधा छप्पर बचा। नहीं तो आधियों का क्या भरोसा था, पूरा छप्पर भी उड़ सकता था। हम गरीबों की भी उसे फिकर है और खयाल है, तो उसे धन्यवाद दे दूँ। हमारी प्रार्थनाएं सुनी गई हैं, हमारी प्रार्थनाएं व्यर्थ नहीं गईं। नहीं तो आधा छप्पर बचना मुश्किल था।

फिर वे रात दोनों सोए। सोच ही सकते हैं आप, दोनों अलग-अलग ढंग से सोए। क्योंकि जो क्रोध और गुस्से से भरा था और जिसकी सारी प्रार्थनाएं व्यर्थ हो गई थीं, वह रात भर करबट बदलता रहा और रात भर उसके मन में न मालूम कैसे-कैसे दुखस्वप्न चलते रहे, चिंताएं चलती रहीं। वह चिंतित था। वर्षा ऊपर खड़ी थी, बादल आकाश में घिर गए थे, आधा छप्पर उड़ा हुआ था, आकाश दिखाई पड़ रहा था। कल वर्षा शुरू होगी, फिर क्या होगा?

दूसरा बहुत गहरी नींद सोया, क्योंकि जिसके प्राण धन्यवाद से भरे हैं और ग्रेटिटयूड से और तज्ज्ञता से उसकी निद्रा जैसी सुखद निद्रा और किसकी हो सकती है! वह सुबह उठा और नाचने लगा और उसने एक गीत गाया और उस गीत में उसने कहा कि हे परमात्मा! हमें पता भी न था कि आधे झोपड़े का इतना आनंद हो सकता है। अगर हम पहले से पता होता तो हम तेरी हवाओं को कष्ट भी न देते, हम खुद ही आधा छप्पर अलग कर देते। ऐसी आनंददायी नींद तो मैं कभी सोया ही नहीं। आधा छप्पर नहीं था, तो जब भी रात आंख खुली तो तेरे आकाश के तारे भी दिखाई पड़े, तेरे घिरते हुए बादल भी दिखाई पड़े। अब तो बड़ा आनंद होगा, वर्षा आने को है, कल से पानी पड़ेगा, हम आधे छप्पर में सोए भी रहेंगे और रात तेरी बूंदों की आवाज, तेरी बूंदों का संगीत भी हमारे पास ही पड़ता रहेगा। हम पागल रहे अब तक। हमने कई वर्षाएं ऐसे ही पूरे छप्पर के भीतर छिपे हुए बिता दीं। हमें पता भी न था कि आधे छप्पर का भी कोई आनंद हो सकता है। अगर हमें मालूम होता, हम तेरी आधियों को तकलीफ भी न देते, हम खुद ही आधा छप्पर अलग कर देते।

उस दूसरे युवक ने पूछा कि मैं यह क्या सुन रहा हूँ यह सब क्या बकवास है? यह क्या पागलपन है? यह तुम क्या कहते हो?

तो उस के ने कहा मैंने बहुत खोजा और मैंने यह अनुभव कर लिया कि जिस बात से दुख बढ़ता हो वह जीवन-दिशा गलत है और जिस बात से आनंद बढ़ता हो वह जीवन-दिशा सही है। मैंने भगवान को धन्यवाद दिया, मेरा आनंद बढ़ा। तुमने भगवान पर क्रोध किया तुम्हारा दुख बढ़ा। तुम रात बेचीन रहे, मैं रात शांति से सोया। अभी मैं गीत गा पा रहा हूँ और तुम क्रोध से जले जा रहे हो। बहुत पहले मुझे समझ में आ गया कि जो आनंद बढ़ाता है वही जीवन-दिशा सही है। और मैंने अपनी सारी चेतना को उसी तरफ प्रवाहित किया है। मुझे पता नहीं भगवान है या नहीं, मुझे पता नहीं उसने हमारी प्रार्थनाएं सुनी या नहीं सुनीं। लेकिन सबूत है मेरे पास कि मैं आनंदित हूँ और नाच रहा हूँ और तुम रो रहे हो और क्रोधित हो और परेशान हो। मेरा आनंद, मैं जैसा जी रहा हूँ उसके सही होने का सबूत है। तुम्हारा दुख, तुम जैसे जी रहे हो, उसके गलत होने का सबूत है।

साधना पथ, प्रवचन-07

हंस दो जरा...!



5% GST देने के बाद दूध अगर फट जाए तो GST के पैसे रिफंड होंगे ? 😞😞
 CA:- रिफंड का तो नहीं पता लेकिन अगर उस फटे हुए दूध से आपने पनीर बना लिया तो और GST देना पड़ेगा 😊😊🙏



A senior CA explained to his junior CA-

Let's say you donated Rs.5000 to PM/ CM Relief Fund .
 On the other hand, I bought a whisky bottle worth Rs 5000/-
 The question is who contributed more?

1. On the Rs 5000 you donated, you got a 30% tax rebate. Therefore, you actually landed up earning back Rs 1500 In other words, by donating Rs 5000 you made a net contribution of just Rs 3500

2. On Alcohol, the total taxes (excise and GST) added up to approximately 72% of the MRP. So when I paid Rs 5000, Rs 3600 went to the state exchequer...

...and 12.5 pegs of pleasure from a 750 ml whisky bottle came to me.

Therefore, not only did I contribute more, I created jobs at the Distillery, their suppliers of labels, bottles, caps, machinery etc., jobs at the Marketing Company, jobs at the Wine Shop and moreover I was in high spirits doing so, while you do not even know where your money went.

Think of it. Next time, Buy a Bottle of Whisky to serve your Nation.

Be a responsible citizen!!

सूचना

कृपया इस दिवाल पर
कुछ भी न लिखें.

ठीक है सर



मस्तिष्क की क्षमता लगभग 2.5 पेटाबाइट की होती है।

1 पेटाबाइट = 1000 टेराबाइट।

1 टेराबाइट = 1000 जीबी

। -मतलब 16 जीबी की मेमोरी वाले 1 लाख 56 हजार पैन ड्राइव मस्तिष्क में 10000 करोड़ मज्जापेशी (न्यूरॉन्स) होते हैं।

इतने शक्तिशाली मस्तिष्क को बिगाड़ने के लिए एक स्त्री ही पर्याप्त है। और ठीक करने के लिए बस तीन पैंग!

शादी के बाद लड़की, तुमने तो कहा था कि करोड़ों का व्यापार है तुम्हारा ? लड़क: बहरी, करोड़ों का नहीं पकोड़ों का कहा था, चल बेसन घोल जल्दी से...



लड़की होटल में गई खाने का आर्डर किया। खाने के बाद बिल दिया।

फिर अचानक वेटर के पास गई और उसे कहने लगी: “ककड़ी के दो टुकड़े रोज आंखों के ऊपर रखाकरो, रात को मेथी पानी में भिगा कर सुबह छान कर पिया करो।”

वेटर ने हैरान होकर पूछा कि यह सब आप मुझे क्यों बता रहे हैं ?

लड़की ने कहा: मुझे किसी ने कहा था कि बिल पे करने के बाद वेटर को कुछ ना कुछ टिप जरूर देना।

ध्यान साधना शिविर कार्यक्रम

सूचना: ऑनलाइन कार्यक्रम अब शनिवार से शुक्रवार



OSHO FRAGRANCE

Program Schedule



Date	Program	Place	Contact
10-26 Aug	Geeta Dhyana Yagya Adhyaay 14 - Bhag 1	Online	Osho Fragrances Numbers
3-9 Sept	Shiv-Shakti Sadhana Shivir Part - 3	Online	Osho Fragrances Numbers
3-8 Sept	Shiv-Shakti Sadhana Shivir Part - 3	Osho Meditation Commune, Hissar, HR	9205170237 9510402327
0-12 Sept	Prana Yog Shivir	Osho Meditation Commune, Hissar, HR	9205170237
7-23 Sept	Geeta Dhyana Yagya Adhyaay 14 - Bhag 2	Online	Osho Fragrances Numbers
1-7 Oct	Mahavir Meditation Mahotsav	Online	Osho Fragrances Numbers
8-13 Oct 7th eve to 13th noon	Osho Dhyana Shivir	Neel Farm & Resorts, At Telkampti (Nandikbeda), The - Kalmeshwar, Nagpur, MS	9327612005, 9960203081 7755970861, 9836649377 9699487500, 3010974588
15-20 Oct	Self Realization Retreat	Osho Anuridham Ashram, Devtal, Jabalpur, MP	7828104233 8717961278
15-21 Oct	Self Realization Retreat	Online	Osho Fragrances Numbers
29 Oct - 4 Nov	Bhakti Sadhana Shivir	Online	Osho Fragrances Numbers
5-Nov	Satsang	Kathmandu, Nepal	+977 9841247948 +977 9851019704
7-9 Nov	Buddham Sharanam Gacchami	Lumbini, Nepal	+977 9857022506 +977 9857022750
11-15 Nov	Ashtavakra Mahageeta Shivir	Pokhira, Nepal	+977 9813676196 (Whatsapp message only)
12-18 Nov	Ashtavakra Mahageeta Shivir	Online	Osho Fragrances Numbers
26 Nov - 2 Dec	Cosmic Realization Retreat	Online	Osho Fragrances Numbers
10-16 Dec	OSHO BIRTHDAY CELEBRATION WEEK	ONLINE + Shree Rajneesh Dhyana Mandir	Osho Fragrances Numbers
17-21 Dec	Tao Sadhana Shivir	Osho Madhuban, Champa, Chhattisgarh	7746968159 9575518984
22-25 Dec	Jeene Ki Kalaa	Osho Madhuban, Champa, Chhattisgarh	7746968159 9575518984
24-30 Dec	Nirvaan Retreat	Online	Osho Fragrances Numbers
6-11 Jan	Gehan Sadhana Shivir	Guruharsahai, Punjab	9814587745 9859851100 9914140909
7-13 Jan	Gehan Sadhana Shivir	Online	Osho Fragrances Numbers
21-27 Jan	Osho Loving Awareness Retreat	Online	Osho Fragrances Numbers




www.oshofragrance.org




[oshofragrance](https://www.facebook.com/oshofragrance)

[rajneeshfragrance](https://www.youtube.com/rajneeshfragrance)

पंजीकरण एवं अधिक जानकारी हेतु
 सुबह 10 बजे से रात 8 बजे के बीच संपर्क करें
9464247452, 9311806388, 9811064442
9466661255, 9890341020, 8889709895

गुरु पूर्णिमा का उत्सव दिल्ली में

बुधवार, 13 जुलाई 2022 को गुरु पूर्णिमा का उत्सव दिल्ली में 400 से अधिक ओशो प्रेमियों ने मिलकर बहुत ही धूमधाम से ग्रीन लांज बैंक्रेट में मनाया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत हुई मस्तो बाबा द्वारा कराए गए ध्यान में साधकों की गहरी डुबकी से।

ओशो के प्रति घन्यवाद भाव से भरे मा अमृत प्रिया और स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती जी के साथ सबने प्रार्थना से कार्यक्रम के दूसरे भाग का आगाज हुआ।

फिर पुणे से आए स्वामी अनादि और टीम के गायन का सबने आनंद लिया। उत्कर्ष हुआ मा जी के कोकिल कंठ से निकले ओशो के चरणों में अर्पित गीत के माध्यम से ध्यान में डूबकर और स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती जी के आशीष वचनों से।

उत्सव की कुछ झलकियाँ प्रस्तुत है।





पुणे में स्थित समर्थगढ़ फाउंडेशन में 18-23 जुलाई तथा 25-30 जुलाई अद्वैत साधना शिविर का आयोजन किया गया। स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती और मा अमृत प्रिया जी के मार्ग दर्शन में विभिन्न स्थानों से आए साधकों ने प्रकृति की गोद में ध्यान का लाभ उठाया। स्वामी दिगंबर, स्वामी अभय, मा कविता, मा मोक्षा तथा मस्तो बाबा ने प्रोग्राम के संचालन में सहयोग देकर सुंदर भूमिका निभाई।



ओशो सुगंधा

के पिछले अंक...

ओशो सुगंध मासिक ई-पत्रिका जो पढ़ी, देखी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें समाधि में डूबने, आनंद व भाव-विभोर से भरपूर प्रवचनों और भजनों के ऑडियो-वीडियो लिंक्स दिए गए हैं।



नियमित रूप से ई-पत्रिका प्राप्त करने हेतु, अपने मोबाइल नं. को पंजीकृत करवाने के लिए सामने दिए गए चिह्न को दबाएं।

पत्रिका को खोलने के लिए पुस्तक वाले चिह्न को दबाएं।



अभी तक के सभी अंकों के लिए चिह्न का दबाकर उन्हें देख सकते हैं।

